सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

# जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक 8 • 5 नवम्बर 2019 • मूल्य : 20 रु.

## सूरिमंत्र की चौथी व पांचवी पीठिका संपन्न

।। श्री आदिनाथाय नमः ।।

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकान्तिसागरसूरि गुरुभ्यो नमः ।।

# खान्देशे अक्कलकुआं नगरे

# श्री वासुपूज्य जिन मंदिर में

एवं

## श्री आदिनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी

की

## अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

सादर आमंत्रण...

❁ पावन निश्रा ❁

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

❁ प्रेरणा ❁

पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.

❁ आशीर्वाद ❁

पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.

पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.

पू. माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.

❁ पावन सानिध्य पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा

महोत्सव प्रारंभ : वि. सं. 2076 मिगसर वदि 7, मंगलवार ता. 19 नवम्बर 2019

प्रतिष्ठा शुभ मुहूर्त : वि. सं. 2076 मिगसर वदि 12, शनिवार ता. 23 नवम्बर 2019

सकल श्री संघ से पधारने का हार्दिक निवेदन है।

❁ निवेदक ❁

## श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी चेरिटेबल ट्रस्ट

अक्कलकुआं- 425 415 जिला- नंदुरबार {महाराष्ट्र}

संपर्क सूत्र– प्रेमचंद गोलेच्छा 9423944100 राजेन्द्र डागा 9423496759, जसराज कोचर 9423194116

## आगम मंजूषा

भगवान महावीर

**अप्पा नदी वेयरणी अप्पा में कूडसामली।**
**अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा में नंदणं वणं।।**

आत्मा ही वैतरणी नदी है और आत्मा ही कुटशाल्मली वृक्ष है। आत्मा ही कामदुधा धेनु है और आत्मा ही नंदनवन है।

The soul itself is the river vaitrani. The soul is a kutashalmali tree. The soul is kama-duha (wish-fulfilling) cow and the soul is the Nandanavana (a park in paradise).

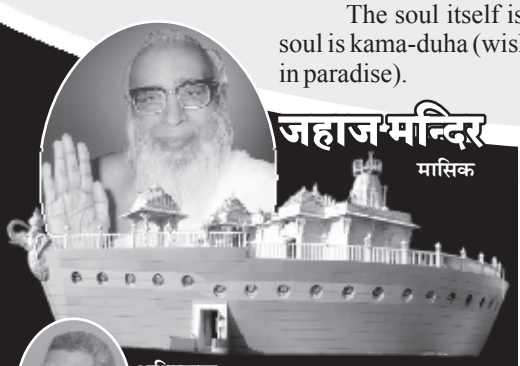


# जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**

वर्ष : 16 अंक : 8 5 नवम्बर 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

**डॉ. यू.सी. जैन ( महामंत्री )**

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है


**सदस्यता शुल्क**

| | | |
|---|---|---|
| संस्था संरक्षक | : | 21,000 रूपये |
| मानद संरक्षक | : | 11,000 रूपये |
| 15 वर्षीय सदस्यता | : | 2500 रूपये |
| 12 वर्षीय सदस्यता | : | 2000 रूपये |
| 6 वर्षीय सदस्यता | : | 1000 रूपये |
| त्रिवार्षिक सदस्यता | : | 500 रूपये |
| वार्षिक सदस्यता | : | 200 रूपये |

**सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि**

**ICICI की किसी भी शाखा में**

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653


**सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक**

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर ( राज. )

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org


## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. नवप्रभात | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 04 |
| 2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1 | कड़प्पा | 05 |
| 3. आध्यात्मिक क्षितिज के सूरज- आचार्य जिनकान्तिसागरसूरिजी म. | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 06 |
| 4. ऐसे थे मेरे गुरुदेव | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 08 |
| 5. सोलह सतियाँ कथानक | मुनि मनितप्रभसागरजी म. | 09 |
| 6. गौत्र का इतिहास | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 11 |
| 7. शासन-प्रेम में अग्रणी .... | महोपाध्याय विनयसागरजी | 12 |
| 8. कैलाश सदा याद रहेगा | गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. | 15 |
| 9. अपूरणीय क्षति | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. | 17 |
| 10. युवा रत्न श्री कैलाशजी संकलेचा की विदाई | संकलित | 19 |
| 10. अधूरा सपना | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. | 26 |
| 11. जीवन जीत गये | साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. | 28 |
| 12. श्रद्धा फलीभूत हुई | मुनि समयप्रभसागरजी म.सा. | 31 |
| 12. समाचार दर्शन | संकलित | 35 |
| 13. जटाशंकर | आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. | 42 |


## पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री के विहार की सूचना

- ता. 12.11.19 को धूलिया से अक्कलकुआ की ओर विहार
- ता. 23.11.19 को अक्कलकुआ में जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं वासुपूज्य जिनमंदिर में प्रतिष्ठा
- ता. 6.12.19 को सूरत पाल स्थित श्री शंखेश्वरा हाईट्स में जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा
- ता. 16.12.19 से 25.12.19 अहमदाबाद से श्री शंखेश्वर महातीर्थ छह री पालित पद यात्रा संघ
- ता. 8.01.20 से 12.01.20 तक श्री शंखेश्वर तीर्थ से पाटण तीर्थ छह री पालित पद यात्रा संघ
- ता. 26.01.20 को कारोला में जीर्णोद्धारित शिखरबद्ध श्री नमिनाथ जिनमंदिर की प्रतिष्ठा
- ता. 7.02.20 बालोतरा में कुमारी पायल बागरेचा भागवती दीक्षा
- ता. 16.02.20 खेतासर में दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि जन्मभूमि तीर्थ में जिनमंदिर दादावाडी की प्रतिष्ठा
- ता. 26.02.20 बाडमेर में कुमारी पूजा संखलेचा की भागवती दीक्षा।

# नवप्रभात

हिन्दी भाषा के दो शब्द चिन्तन-वीथी से गुजर रहे थे।

1. राग 2. अनुराग ।

एकान्त क्षण इस शब्दों पर गहराई से विचार करने में निमित्त बने।

राग क्या है? अनुराग क्या है?

क्या अन्तर है दोनों में!

सामान्य विचारों से देखे तो लगता है कि इन दोनों शब्दों की व्याख्या में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

पर गहराई से विचार करो तो रात और दिन जितना अन्तर प्रतीत होता है।

राग अंधेरा है... अनुराग उजाला है...!

राग मन को अटका देता है। अटका हुआ मन सदा-सदा भटकता ही है।

जबकि अनुराग निर्मल झरणे की भांति कल-कल बहता हुआ सबको निर्मल करता जाता है।

राग वह नहीं देखता, जो होता है। बल्कि वैसा देखता है, जैसा वह देखना चाहता है।

राग के कारण दृष्टि की यथार्थता भी खो जाती है।

अनुराग में सहज प्रेम है, लक्ष्य की खोज है।

राग चिपकने और चिपकाने का काम करता है, बहुत मजबूती से।

अनुराग मन को स्वतंत्र रखता है। वह बाधक नहीं बनता। वह सहारा बनता है।

राग संक्लेश देता है। अनुराग समाधि देता है।

जीवन के तालाब में राग कीचड़ जैसा होता है।

अनुराग उसी तालाब में कमल की भांति निर्लिप्त होता है।

वह उसी में जन्म लेता है, पर उससे अलग रहता है।

यही तो जीवन की महिमा है। जीवन से राग को दूर करो। अनुराग पैदा करो।

राग व्यक्ति से होगा। अनुराग गुणों से होगा और वे गुण ही तुम्हें मंजिल की ओर ले जायेंगे।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 2

# कडप्पा

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

'दादा गुरुदेव' जिनशासन वे चमकते सितारे हैं जिन्होंने अपनेच ारित्र-बल,त प-ऊष्मा और ज्ञान-रश्मियों से समाज-धर्म को वह सुन्दर आकार दिया, जो आज भी शासन की गौरवपूर्ण समृद्धि पर नाज़ करता है।

गुरुदेव शताब्दियों से गच्छ-पंथ और धर्म के संकीर्ण घेरों के बाहर निकलकर पूजे जाते रहे हैं, श्रद्धा के अनुपम केन्द्र रहे हैं।

लगभग छह लाख की आबादी वाले कडप्पा में बी.के.एम. स्ट्रीट में स्थित है श्री नमिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर। नमि प्रभु के दायें-बायें स्थित हैं शान्तिनाथ एवं मुनिसुव्रत स्वामी! प्रभुत्रय की प्रतिमा से नितरती प्रभुता की अमीधारा के सम्मुख दुनिया के सारे ऐश्वर्य फीके, तुच्छ और हीन प्रतीत होते हैं।

मंदिर के रंगमण्डप में एक गोखले में धातु के चौकीनुमा खण्ड पर दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वर जी म.सा. की पंच धातुमयी प्रतिमा प्रतिष्ठित है, जिसका वर्ण स्वर्ण है।

प्रतिमा के एक तरफ जिनदत्तसूरि जी की एवं दूसरी तरफ मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि जी की धातुमयी चरण पादुका प्रतिष्ठित है तथा उसके आगे भी एक चरण पादुका स्थापित की गयी है।

वि.सं. 2044 द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ला 10, शनिवार, दिनांक 25.06.1988 को प्रतिष्ठित प्रतिमा एवं चरण पादुका अनेक भक्तों की श्रद्धा का परम-पावन धाम है।

ये चरण द्योतक हैं शुद्धाचरण के.... सदाचरण के.... मुनि जीवन के! एक ही सन्देश है इनका- चलो संयम की दिशा में, जहाँ अध्यात्मिक अमृत झरणा झर रहा है। अन्तर की ऊर्जा से आप्लावित है यह संयम की अनमोल डगर।

पूर्वमुखी प्रतिमा एवं चरण चारित्र-उदय के संकेत-स्वरूप हैं। सम्प्रदायों की विविधता के मध्य दादा गुरुदेव के प्रति हर कोई श्रद्धा सम्पन्न है।

भृकुटि यक्ष, गांधारी, यक्षिणी, नाकोड़ा भैरव देव और चमत्कारी भोमिया जी की कृपा से श्री संघ में उन्नति और आराधना का सुन्दर वातावरण है।

साधु-साध्वी जी के प्रवासार्थ आराधना भवन एवं जैन भवन है। इस गाँव में 100 जैन घर हैं, जो समस्त मंदिर में आस्था रखने वाले हैं। मंदिर की व्यवस्था श्री नमिनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट करता है।

**श्री नमिनाथ जैन श्वेताम्बर मंदिर,**

बी.के.एम. स्ट्रीट, कडप्पा - 516 001, दूरभाष : 08562 - 251040

पुण्यतिथि पर
विशेष आलेख

# आध्यात्मिक क्षितिज के सूरज - आचार्य जिनकान्तिसागरसूरिजी म.

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

राष्ट्रीय अखंडता, धार्मिक समन्वय और अध्यात्म परिवेश के प्रति पूर्ण समर्पित पूज्य आचार्य प्रवर श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वरजी महाराज साहब का जन्म राजस्थान के चुरू कस्बे में रतनगढ़ में विक्रम संवत् १९६८ माघ कृष्णा एकादशी को हुआ था। बचपन से ही बालक तेजकरण की प्रवृत्तियों में गंभीरता और मस्ती का विचित्र समन्वय परिलक्षित होता था। जगत में चारों ओर घट रही घटनाओं ने उसके बाल-मानस पर गहरे प्रश्न-चिन्ह अंकित कर दिये थे, जिनके समाधान प्राप्ति की उत्सुकता और आतुरता प्रतिपल बढ़ती जा रही थी। सूर्य प्रातः उदित होकर शाम अस्त हो जाता है? फूल प्रातः खिलकर शाम मुरझा जाता है? क्या इन प्राकृतिक घटनाओं में हमारे जीवन रहस्य के संकेत नहीं छिपे हैं? ओसवाल कुल के सिंघी गोत्र के श्री मुक्तिमलजी का नन्हा मुन्हा लाडला तेजकरण इन प्रश्नों की हार माला खुद ही गूंथकर उन्हें सुलझाने का प्रयास करता रहता था।

बचपन में वात्सल्यमयी माता श्रीमती सोहनदेवी के आकस्मिक स्वर्गगमन ने बालक तेजकरण को गहरे घाव दिये। इस घटना ने आंखों में आंसू दिये और मासूमियत छीन ली। बचपन में ही बचपन खो गया। जीवन का भौतिक रस मानो उड़ गया। उठ रहे सवालों के मध्य जीवन की सत्यता/यथार्थता के परिवेश में प्रवेश किया और मात्र दस वर्ष की लघु वय में पूज्य पिताजी श्री मुक्तिमलजी के साथ तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम गणाधिपति श्री कालु गणिजी के करकमलों से उनकी सन्निधि में महाभिनिष्क्रमण कर संयम पथ स्वीकार कर लिया। हृदय बदला तो वेष बदला! मानस बदला तो परिवेश बदला! लक्ष्य बदला तो नाम बदला! परिवर्तन ही तो संयम की मूल भाषा और परिभाषा है।

इक्कीस वर्ष की उम्र में तेरापंथ संप्रदाय का वैचारिक प्रवाह समुचित न लगने के कारण सांप्रदायिक अभिनिवेश का त्याग कर मूर्तिपूजक संघ के खरतरगच्छ समुदाय के आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब के श्री चरणों में दीक्षित होकर मुनि कान्तिसागर बने।

अध्ययन द्वारा आगम ज्ञान और ज्ञान के माध्यम से आत्म ध्यान की अतुल गहराईयों में डुबकी लगी। विचाराधारा में परमात्मा महावीर के उपदेशों का मंथन था तो व्यावहारिक जगत की अनुभूतियां उनकी करुणा का आधार थी। वे आध्यात्मिक रूप से संत थे, सामाजिक रूप से सुधारक थे, तार्किक रूप से तत्वज्ञ थे, परम्पराओं की दृष्टि से क्रान्तिकारी थे, आचार संहिता की दृष्टि से दृढ़ थे तो इन सब विविध

रूपों/पर्यायों में रहकर भी वे एक रूप थे मैं आत्मा हूं!

राष्ट्रीय एकता और अखंडता का चिंतन भारतीय मनीषा और सांस्कृतिक विरासत पर आधारित था। राष्ट्र की सुरक्षा में ही धर्म और संस्कृति की सुरक्षा है। इसी चिंतन का परिणाम था कि आजादी के पूर्व उनके प्रवचन भारतीय अस्मिता को विदेशी हथकड़ियों से मुक्त करने के संकल्प के साथ प्रारंभ होते थे तो इस पुरूषार्थ के यज्ञ में हर धर्म संप्रदाय और जाति वालों को आहुति देने के आव्हान के साथ पूर्ण होते थे। उनकी ललकार भारतीय जनमानस में जोश का संचार करती थी।

आजादी के बाद चीन के साथ चले भारत के युद्ध के समय अर्थ संग्रह की आवश्यकता थी। तब राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया, जो पूज्यप्रवर की राष्ट्रीय विचाराधारा, धर्मसमन्वय के उदात्त दृष्टिकोण से अत्यधिक प्रभावित थे, उदयपुर चातुर्मास में प्रवचन सभा में उपस्थित होकर राष्ट्र की स्थिति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। पूज्य गुरूदेव श्री ने राष्ट्रीय कर्तव्य का ठाणांग सूत्र के आधार पर 'रट्ठ धम्मे' का विस्तृत विश्लेषण कर जनता को अपने कर्तव्य बोध का सदुपदेश दिया और इस राष्ट्र हित कार्य में अपना योगदान अर्पण करने का आव्हान किया। यह पूज्य आचार्यश्री के ही ओजस्वी प्रवचन का परिणाम था कि प्रवचन में उपस्थित लोगों ने अपनी जेबें खाली कर दी, महिलाओं ने आभूषणों का ढेर लगा दिया।

वे साक्षात् प्रज्ञापुरूष थे। एक बार एक व्यक्ति ने प्रश्न किया- गुरुदेव मैं प्रतिदिन मंदिर जाता हूं फिर मेरे जीवन में संकटों का अंधेरा और पीड़ाओं की दुर्गन्ध नष्ट क्यों नहीं होती?

गुरुदेव समझ गये कि यह व्यक्ति धर्म को सौदा समझने वाला एक सोदागर है। उसे उसी की भाषा में समझाते हुए पूज्य आचार्यश्री ने कहा कि गन्दा नाला जहां विराट रूप में बहता हो वहां यदि कोई व्यक्ति एक छोटी सी अगरबत्ती जलाये तो क्या दुर्गन्ध समाप्त हो जायेगी? वह व्यक्ति बोला नहीं! इतनी दुर्गन्ध एक छोटे से प्रयास से कैसे दूर होगी? यह नामुमकिन है!

पूज्य प्रवर ने कहा कि ठीक वैसे ही पांच मिनट के लिये तुम मंदिर जाते हो और दु:खमुक्ति चाहते हो! तुम्हारी चाह भी तो वैसी ही है। अपने भीतर पैदा हो रहे परिणाम (भाव) ही तो परिणाम (लाभ) देने वाला है।

वि.सं. २०३९ में आचार्य पद पर समारूढ़ होकर वि.सं. २०४२ मार्गशीर्ष कृष्णा सप्तमी को स्वर्गवासी हो गये। अपने देहविलय का पूर्वाभास उन्हें पूर्व में ही हो चुका था। राजस्थान प्रान्त के जालोर जिले के मांडवला नगर में उन्होने शिष्य मंडल के साथ मार्गशीर्ष कृष्णा छठ को प्रवेश किया और थोड़ी ही देर बाद उन्हें हल्का-हल्का बुखार प्रारंभ हुआ। उसी समय उपस्थित संघ के सामने मुझे बुलाकर हिदायतें सौंपी। मुझे स्पष्ट रूप से कहा कि मणि! मेरे जाने का समय आ गया है। मैं पीड़ा से भर उठा था। काल के सार्वजनीन सत्य का बोध होने पर भी मैं पूज्य गुरुदेव श्री के स्नेहपाश में बंधा इस सत्य को स्वीकार करने की मन स्थिति में नहीं था। हृदय जार-जार रो रहा था। उपस्थित श्रद्धालुओं के आश्वासन भी मेरे आंसुओं को नहीं रोक पा रहे थे। और यही हुआ। सप्तमी को होश पूर्वक आशीर्वाद देते-देते अनन्त की ओर प्रस्थित हो गये।

आज उसी मांडवला नगर में उनके समाधि स्थल पर उनकी विचार धारा को मूर्त रूप देता स्मारक निर्मित हुआ है। जिसमें जहाज के आकार में एक अनुपम, अतुलनीय स्थापत्य उकेरा गया है, जिसमें जिनमंदिर, दादाबाड़ी, गुरुमंदिर के साथ-साथ साधु साध्वी उपाश्रय एवं विविध प्रकल्पों के साथ प्रगति की ओर बढ़ रहा है।

पूज्य आचार्यश्री की 34वीं पुण्यतिथि है। उनके उपदेशों, जीवन कथ्यों और आचार विचारों को मानव मनस्विता के प्रांगण में मूर्त रूप देने का पुरुषार्थ करना ही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गुरु स्मृति
68

# ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

विजयवाडा के सफल प्रवास के पश्चात् विहार कर एलुरु होते हुए राजमहेन्द्री पधारे। श्री संघ के हर्ष व उल्लास के वातावरण का अनुभव उस समय के पत्रों में प्रकाशित समाचारों से ज्ञात होता है। दो दिन के प्रवास का भाव लेकर पूज्यश्री राजमहेन्द्री पधारे थे, पर संघ के आग्रह ने उन्हें 20 दिन रुकने के लिये मजबूर कर दिया।

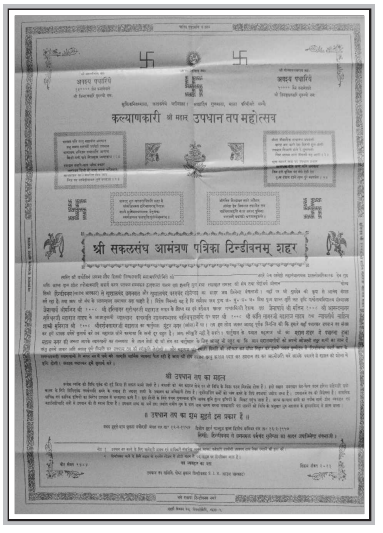
कल्याणकारी श्री सकल उपधान तप महोत्सव

श्री सकलसंघ आमंत्रण पत्रिका टिण्डीवनम् शहर

वे 20 दिन पर्युषण महापर्व की भांति आराधना, प्रवचन, उल्लास व धर्मश्रद्धा से परिपूर्ण बीते। वातावरण धर्म से ओतप्रोत बना। जातिभेद व सम्प्रदाय भेद की सारी दीवारें जैसे टूट कर शहर का माहौल एक विशाल हॉल में परिवर्तित हो गया।

राजमहेन्द्री के सफल प्रवास के पश्चात् पूज्यश्री गुडीवाडा तीर्थ पधारे। ध्यान, साधना के लिये सहायक एकान्त व पूर्ण ऊर्जा से ओतप्रोत वातावरण का स्पर्श कर अनुभूत धन्यता को उल्लास भरी प्रसन्नता द्वारा पूज्यश्री ने अभिव्यक्त किया। दस दिन का मंगल प्रवास आत्म-स्पर्श का परम निमित्त बना।

चूंकि चातुर्मास के दिन समीप आ रहे थे, अतः चाह कर भी अधिक रुक नहीं पाये। गुडीवाडा परमात्मा के अमृत झरणे के अन्तर् अनुभव को आत्मा में परम स्थिर कर विजयवाडा, तेनाली होते हुए गुण्टुर की ओर विहार किया।

वि. सं. 2013 आषाढ शुक्ल प्रतिपदा को चातुर्मास हेतु गुण्टुर नगर में प्रवेश किया। चार माह का दीर्घ समय प्रवचन, तपस्या आदि के मंगल माहौल में कब पूरा हो गया, पता ही नहीं चला। जनता धन्यता का अनुभव करने लगी।

चातुर्मास में ही आगामी चातुर्मास व कार्यक्रमों हेतु विनंतियों का क्रम प्रारंभ हो गया। दक्षिणी तट पर स्थित टिण्डीवनम् निवासी गोलेच्छा परिवार उपधान तप की आराधना करवाने हेतु अपने भाव लेकर पूज्यश्री के चरणों में उपस्थित हुआ। पूज्यश्री ने फरमाया- अभी समय काफी है।

चातुर्मास बाद ही अवसर देखेंगे।

चातुर्मास पश्चात् विहार कर पूज्यश्री मद्रास पधारे। वहाँ सेठ खुशालचंदजी के परिवारजन सेठ छगनमलजी धरमचंदजी गोलेच्छा परिवार के तीव्र आग्रह को स्वीकार कर उपधान तप की अनुमति प्रदान की।

यह गोलेच्छा परिवार मूलतः बीकानेर निवासी है। वर्षों से टिण्डीवनम् में निवास करता है। व्यापार के क्षेत्र में तो बहुत आगे है ही, पर वहाँ की स्थानीय जनता में बहुत आदरणीय है।

(शेष पृष्ठ 11 पर)

सोलह सतियाँ
कथानक
13

# विलक्षण वैराग्यवती सती द्रौपदी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गतांक से आगे...

शील का दिव्य प्रभाव खुली आँखों से देख रहे हो, तब भी तुम लोगों में अक्ल कहाँ है? तुम कितने ही हथकण्डे क्यों न अपना लो, सत्तीप्रवरा के विस्तृत शील समुद्र की थाह कभी भी नहीं पा सकोगे। अच्छा यही होगा कि इसी क्षण इस निर्लज्ज कृत्य को विराम दो अन्यथा इस सती के कोप के भाजन बन गये तो हमारा नामोनिशां ही मिट जायेगा।

यद्यपि दुर्योधन का कामातुर मदांध मन धृतराष्ट्र के कथन से सहमत नहीं था तथापि चीर का ढेर लगा देने पर भी उसका छोर नजर नहीं आ पाने के कारण स्वयं पटाक्षेप करने के लिये मजबूर था।

गहरा लम्बा उसास छोड़ता हुआ दुर्योधन बोला- छोड़ो, दुशासन! यों चीर का ढ़ेर लगाने का अर्थ भी क्या है! द्रौपदी कोई स्त्री है या कपड़े का मालगोदाम। अब इस कपड़ा बनाने वाली स्त्री की भला क्या जरूरत, जिसके हुस्न का आनंद ही उठाया न जा सके।

पल दो पल पश्चात् द्रौपदी विशिष्ट ध्यान-साधना के प्रयोग से बाहर आयी। वह परम सहज, शान्त और समाधिस्थ थी। उसकी आँखों की आभा विशिष्ट थी। मुख-मण्डल इतना दैदीप्यमान था कि देखने वाले की आँखें ही चुंधियां जाये।

दुर्योधन तात् धृतराष्ट्र की ओर मुखातिब होकर बोला- पिताश्री! द्युतक्रीड़ा में पराजय के साथ पाण्डुपुत्रों की सम्पूर्ण चल व अचल सम्पत्ति पर मेरा अधिकार हो चुका है। बारह वर्षों की निश्चित कालावधि पर्यन्त इन्हें वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास करना होगा। हाँ! एक रास्ता जरूर है, यदि द्रौपदी मेरी आज्ञा स्वीकार कर ले तो उसके साथ-साथ पाण्डु-पुत्र वनवास से बच सकते हैं एवं राज्याधिकार भी पुनः मिल सकता है।

द्रौपदी संयत स्वर में मुखर हुई- दुर्योधन! तेरा साम्राज्य तो क्या स्वयं सुरेन्द्र भी अपना सुरलोक मुझे समर्पित कर दे, तब भी मैं अपने शील का सौदा नहीं करूंगी। बीहड़ वन में कष्टों की ज्वालाओं का पान करना मुझे स्वीकार है, पर अशील के शीतल जल से अपनी प्यास को बुझाना कदापि स्वीकार्य नहीं है।

मुझे अपने नाथ के साथ भूख-प्यास के कष्टों को सहना, वन-वन घूमना मंजूर है। तेरे वासनामय भोग-साधनों की मैं स्वप्न में भी कल्पना नहीं करती। इसी वक्तव्य के साथ उनके साहसी और आत्मविश्वासी कदम वनवासी जीवन की ओर मुड़ गये।

बहुत कठिन है जंगल की दुविधाओं के बीच चलना, जीना और अपनी प्रसन्नता को बनाये रखना। यद्यपि नियति ने उनके साथ अतिक्रूर मजाक किया है तभी तो राजा और राजपरिवार के अंग होने पर भी उन्हें आज वन-वन भिखारी की तरह भटकना पड़ रहा है।

सब कुछ लूट जाने पर भी उन्होंने अपने संयम और संतुलन को बचाये रखा है, और यह उनकी सबसे बड़ी निधि भी है। भोजन-पानी देर सवेर मिलता है, कभी कभी तो पानी पीकर ही सो जाना होता है। कोई स्थान नहीं मिला तो वृक्ष के नीचे सो जाना उनकी मजबूरी है, फिर भी मानसिक सहिष्णुता, धीरता और गंभीरता की छाँव उन्हें सुकुन देती है। समत्व को साधते हुए कष्टों के दिन और पीड़ा की रातें हँसते हँसते बीता देते हैं।

दिन बीतते जा रहे हैं, रातें पीछे छूट रही हैं और समत्व एवं समझ का आँचल थामे एक वन से दूसरे वन, एक नगर से दूसरे नगर, एक डगर से दूसरी डगर, आगे ही आगे बढ़ते जा रहे हैं। इसी क्रम में एक बीहड़-बियावना ऐसा कानन राह में खड़ा हो गया है, जिसे पार किये बिना

किनारा नहीं मिल सकता। दूसरा कोई मार्ग भी नहीं है। उस जंगल में भरी दोपहर में भी जैसे घना स्याह अंधकार पहरा दे रहा है।

पाण्डुपुत्र माँ कुन्ती और द्रौपदी की सार संभाल लेते हुए एक दूसरे का आश्वासन बनकर चले जा रहे हैं। जंगल पूरा हो, उससे पूर्व दूसरे अवरोध के रूप में उत्तुंग पर्वत मध्य मार्ग में उपस्थित हो गया है।

वृद्ध कुन्ती के लिये विहरण अधिक दुरूह बन गया है, तब पांचों पुत्र अहमहमिकया कंधे का सहारा देते हुए आगे बढ़ाते हैं, इसी सफर में अचानक द्रौपदी के पांवों में तीक्ष्ण कांटा चुभ जाता है। दो-तीन बार कोशिश करने पर भी जब शल्योद्धार नहीं हो पाता, तब वह आंचल से छोटा-सा भू भाग स्वच्छ करके वहीं बैठ जाती है। बहुत गहरा चला जाने से पांच-सात बार की अविराम मेहनत से शल्योद्धार होता है और रक्त प्रवाहित होने लगता है। अपने आंचल का किनारा फाड़कर द्रौपदी घाव पर पट्टी बांधकर आगे चलती है, तब सहसा उसे ख्याल में आता है कि स्वामी कहाँ गये? माता कुन्ती भी नजर नहीं आ रही।

वह तीव्र कदमों से पर्वत के शिखर पर पहुँचती है, चारों ओर नजर डालती है पर कहीं कोई नजर नहीं आता है। सन्तप्त मन से वह पुकारती है-....स्वामिन्....कहाँ हो? पर, उसकी पुकार नीले अनन्त आकाश में कहीं खो जाती है।

आँखें फाड़-फाड़कर वह बहुत दूर-दूर तक खोजती है पर कहीं कोई चरण चिह्न दृष्टिगत नहीं होता।

ओह ! कहाँ चले गये प्राणेश्वर ! क्या वे मुझसे इतने अनासक्त हो गये कि मेरा ध्यान रखना ही चूक गये। नहीं...नहीं... यह तो कर्मों की भूलभूलैया है। वह भूला भी देती है, याद भी दिलाती है पर अब कहाँ जाऊँ? किसे पुकारूँ? किससे पूछुं? वह उड़ते पंछियों से....खड़े वृक्षों से पूछती है पर कहीं कोई पता नहीं चलता है, तब चिन्तित हो एक बरगद की छाँव तले बैठ जाती है। दिमाग पर जोर लगाते लगाते मन सुन्न होने लगता है और कब उसके नयन उन्मीलित हो जाते हैं, उसे पता ही नहीं चलता।

एक घटिका जितनी अवधि व्यतीत होते होते द्रौपदी निद्रा से बाहर आती है। निकट ही बह रहे झरणे के पानी से अपनी प्यास बुझाती है। थकान व सुस्ती दूर हो, उससे पहले अनिश्चित विकट भावी की ओर ताकती है तो मन घबरा उठता है-ओह! क्या अब यूँ ही अकेले में जीना होगा। कहाँ मिलेगा आत्मीयजनों का अपनत्व, साथ और विश्वास! फिर पेट का यह गड्ढा रोज-रोज भरने पर भी रिक्त रहता है, इसकी क्या व्यवस्था होगी। इतने में एक काकयुगल काँव काँव करता हुआ उसे पुकारता है। द्रौपदी अपनी सूक्ष्मप्रज्ञा से किसी अदृष्ट संकेत का अनुमान लगाती हुई उत्तर दिशा में उड़ान भर चुके काक-युगल की ओर कदम आगे बढ़ाती है। एक न्यून कालावधि पार होने पर वह अपने आपको सरोवर के निकट पाती है।

उस प्राकृतिक छटा को निहार उसके कर उदास मन को तनिक प्रफुल्लता मिलती है। बहते झरणें....निर्मल नीर. ...नाचते मोर....हरियाली से सजी धरती और निकटस्थ एक गुफा! गुफा स्वच्छ है, थोड़ी गहरी है, सर्दी और वर्षा, दोनों ऋतुओं में सुरक्षा प्रदान करने वाली है।

पंचपरमेष्ठी का स्मरण करती हुई द्रौपदी वहीं रूकने का मानस बना लेती है। उसका मन स्थितप्रज्ञ हो चिन्तनशील हो जाता है-अरे ! मुझे इस तरह व्यथित-पीड़ित नहीं होना चाहिये। बाधाएँ आती हैं पर वे हमेशा की थोड़े ही न होती हैं। पतझड़ का आगमन उद्यान को उजाड़ने के लिये नहीं वरन् उसे नयी बहार देने के लिये होता है। हर सूर्यास्त के पीछे सूर्योदय का, हर रात के बाद प्रभात का आनंद छिपा होता है।

मायूसी से भरे अकेलेपन को मैं साधना से एकान्त में बदल सकती हूँ। अरे ! योगी भी जिस शान्त वातावरण, एकान्त स्थान, नीरव प्रकृति और सहज माधुर्य-सौन्दर्य की चाह रखते हैं, वह वरदान के रूप में मुझे सहज ही उपलब्ध हो गया है।

दृष्टि बदलते ही द्रौपदी की जीवन-सृष्टि बदल गयी। स्वाध्याय, ध्यान, साधना, तप, करूणा, प्रतिबोध, इन विविध इन्द्रधनुषी रंगों में आत्म-विकास के नये पदचिन्ह करती हुई समय का सदुपयोग करने लगी।

(क्रमशः)

गोत्र का इतिहास
19

# खांटेड/कांटेड/खटोड/खटेड/ आबेडा गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

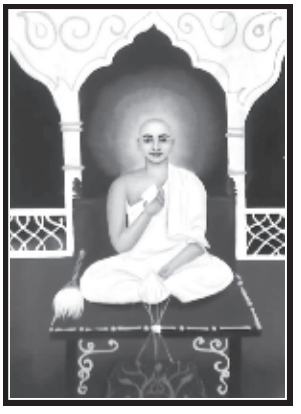

खांटेड गोत्र का उद्भव चौहान राजपूतों से हुआ है। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि जिन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य गोत्र-निर्माण और जैन श्रावक निर्माण बनाया था, वे विहार करते हुए एक बार वि. सं. 1201 में मारवाड़ के खाटू गांव में पधारे।

गुरुदेव की अमृतमयी वैराग्यभरी देशना श्रवण करने के लिये समस्त जातियों के भव्य लोग उपस्थित होने लगे। गुरुदेव ने 'जीवन के लक्ष्य' विषय को प्रवचन का आधार बनाया।

इस मानव जीवन को सफल करने का एक ही उपाय है- धर्म से जुड़ना.. अपनी आत्मा से जुड़ना... सर्वविरति स्वीकार करना। सर्व विरति संभव न हो तो देश विरति धर्म स्वीकार कर सच्चा श्रावक बनना।

गुरुदेव के उपदेशों को श्रवण कर लोगों की मनोवृत्ति परिवर्तित होने लगी। हिंसा का त्याग कर जीवन को करुणामय बनाने का संकल्प ग्रहण करने लगे।

चौहान राजपूत श्री बुधसिंह व अडपायतसिंह दोनों भाई गरीब थे। उन्हें धन की कामना थी। गुरुदेव का नाम सुना तो वे प्रतिदिन प्रवचन सुनने आने लगे। उस परिवार की दिनचर्या बदल गई थी। गुरुदेव के प्रभाव से वह कुछ ही दिनों में धनवान हो गया।

उसने माना कि यह सब गुरुदेव का ही चमत्कार है। उनकी साधना का ही प्रभाव है। जबसे गुरुदेव के संपर्क में हम आये हैं, तब से निरन्तर धनलाभ हो रहा है।

उन्होंने गुरुदेव के समक्ष भावुक होकर प्रार्थना की- हमें धर्म प्रदान कीजिये। पापों से छुटकारा दिलाईये।

गुरुदेव ने उन्हें जैन श्रावकाचार समझाया। उन्होंने सहज स्वीकार कर लिया।

गुरुदेव ने उनके सिर पर वासचूर्ण डाला। बुधसिंह चूंकि खाटू गांव के रहने वाले थे अतः खाटू से खांटेड कहलाये। कालान्तर में खांटेड के कांटेड, खटोड, खटोल आदि अनेक अपभ्रंश हो गये।

अडपायतसिंह से आबेडा गोत्र बना। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि ने वि. सं. 1201 में इन गोत्रों की स्थापना कर ओसवंश में सम्मिलित किया।

❋

## ऐसे थे मेरे गुरुदेव

(शेष पृष्ठ 8 का)

स्थानीय समाज के हृदय में दयालु सेठ के रूप में निवास करता है। उन लोगों के पारस्परिक विवाद, पूर्ण तटस्थता व न्याय के साथ निपटाता है। निश्चित ही गोलेच्छा परिवार ने प्रतिष्ठा की बहुत बडी पूंजी वहाँ एकत्र की है।

मद्रास से विहार कर पूज्यश्री टिण्डीवनम् पधारे। महामंगलकारी उपधान तप का प्रारंभ माघ शुक्ल त्रयोदशी मंगलवार ता. 12 फरवरी 1957 से हुआ। लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं का प्रवेश हुआ था। दक्षिण प्रान्त के इस समुद्रतटीय क्षेत्र में खरतरगच्छ के इतिहास में पहली बार उपधान तप की आराधना होने जा रही थी। गोलेच्छा परिवार का उल्लास व उत्साह अनूठा था। परिवार के भी काफी लोग आराधना कर रहे थे। क्रमशः

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

# शासन-प्रेम में अग्रणी खरतरगच्छीय श्रावकों के नाम

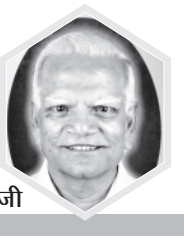

—महोपाध्याय विनयसागरजी

卐 बेगड़ शाखा – के आचार्य जिनेश्वरसूरि (१५वीं शताब्दी) पाटण में खान का मनोरथ पूर्ण कर महाजन बन्दियों को छुड़वाया। जिनधर्मसूरि के राणा घडसी, कालू मोहता, मन्त्री नाल्हा, मन्त्री जयसिंह, जेसलमेर के मन्त्री गुणदत्त, जिनचन्द्रसूरि के समय – कच्छ देश के मं० समरथ, शुभकर, मं० समधर, सरदार समरसिंह आदि, अणहिलपुर पाटण के हरखा, बरजांग, सोनकिरिया, महेवा के सदारंग आदि। जिनगुणप्रभसूरि के समय – जोधपुर के संत पत्ता, चाचा देव, सहजपाल आदि। मन्त्री राजसिंह जेसलमेर के मं० श्रीरंग, मं० वस्ता, मं० रायपाल मं० सदारंग, मन्त्री जिया आदि प्रमुख भक्त व श्रावक थे।

卐 पिप्पलक शाखा – में जिनवर्द्धनसूरि के प्रमुख उपासकों में जौनपुर के महत्तियाण शाखा के ठाकुर संग्रामसिंह, ठाकुर जिनदास, संघपति भीखण, देलवाड़ा (मेवाड़) के आडू नाल्हाशाह, रघुपतिशाह, संघपति जिवदास, मोल्हण, सहजपाल सारंग आदि। मेवाड़ के समरिग, सांगा और साजण, पाटण के मेघा, तिहुणा, सिवा, नौलखा गोत्रीय मन्त्री रामदेव। जिनचन्द्रसूरि (शिवचन्द्रसूरि १८वीं) उदयपुर के दोसी भीखा, दोसी कुशल आदि प्रमुख भक्त व श्रावक थे।

卐 आद्यपक्षीय शाखा – पंचायण भट्टारक जिनचन्द्रसूरि का बादशाह जहांगीर ने मुरतब लवाजमा आदि से बड़ा सम्मान किया। भण्डारी भानाजी नारायण शाह ने कापरड़ा तीर्थ में स्वयंभू पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा करवाई। जिनोदयसूरि (१९वीं सदी) के समय – जैतारण निवासी धाड़ीवाल ठाकुर, शंखवाल खीमराज भीमराज ने संवत् १८०९ में पद महोत्सव किया।

卐 भावहर्षीय शाखा – संवत् १६१६ में जोधपुर में भणसाली लाखा। जिनपद्मसूरि (१९वीं सदी) के बालोतरा के चम्पावत, आउवा के ठाकुर खुश्यालसिंह और जोधपुर के महाराजा तखतसिंह, जोधपुर के मूता लक्ष्मीचन्द, अहमदाबाद के सेठ सूरजमल आदि इनके भक्त थे। जिनचन्द्रसूरि (२०वीं सदी) के समय में – नागपुर निवासी अगरचन्द गोलेछा, जीतमल बोथरा, और धर्मचन्द गोलेछा इनके प्रमुख भक्त थे। गोलेछा अगरचन्द ने नागपुर दादाबाड़ी का जीर्णोद्धार करवाया था।

卐 आचार्यशाखा – जिनसागरसूरि के समय में – सिरोही के महाराजा राजसिंह ने इनका सम्मान किया था। मेड़ता के चोपड़ा आसकरण अमीपाल कपूरचन्द के आपका पदोत्सव विक्रम संवत् १६७४ में किया था। मन्त्री करमचन्द के पुत्र मनोहरदास, जालपसर के मन्त्री भगवन्तदास, मेड़ता के गोलेछा राजसिंह, बीकानेर के करमसी शाह, शाह उदयकरण, हाथी जेठमल, सोमजी, मूलजी, वीरजी, परीख सोनपाल, राजनगर के परीख चन्दभाण, संकचरमल्ल, रायचन्द्र, खम्भात के ऋषभदास भणसाली आदि मुख्य थे। मुकरबखान नवाब भी इनको सम्मान देता था। जिनधर्मसूरि (१८वीं सदी) के समय में – इनकी अध्यक्षता में संघपति उग्रसेन ने अहमदाबाद से शत्रुञ्जय का संघ निकाला था । जिनचन्द्रसूरि के समय में – विक्रम संवत् १७४६ में छाजहड़ रतनसी ने इनका पदमहोत्सव किया था। जिनविजयसूरि के समय में – इनका पदोत्सव हाजीखान डेरावासी बड़हरा धीरुमल्ल ने किया था। जिनोदयसूरि के समय में – विक्रम संवत् १८९७ में गोलेछा माणकचन्द ने बीकानेर में शान्तिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई थी।

卐 जिनरंगसूरि शाखा – अजमेर में विक्रम संवत् १७०१ में बाफणा गोत्रीय गौरा, नानालाल तथा कसाजी मेहता ने पदोत्सव किया था। उदयपुर के कटारिया मेहता, भागचन्द

बच्छावत और मेहता रूपचन्द ने इठ्यासी जिन बिम्बों की प्रतिष्ठा करवाई थी। भाण्डिया गोत्रीय श्रीमाल राय निहालचन्द आपके प्रमुख भक्त थे। जिनचन्द्रसूरि (१८वीं सदी) के समय में - मालपुरा निवासी शंखवालेचा गोत्रीय शाह पंचायण दास ने शत्रुञ्जय की तीर्थ यात्रा का संघ निकाला था। भाण्डिया गोत्रीय शाह मलूक चन्द ने जोबनेर में चौवीस तीर्थंकरों की प्रतिष्ठा करवाई थी। जिनविमलसूरि (१८वीं सदी) के समय में -श्रीमाल भाण्डिया गोत्रीय वसन्तराय, नारायणदास, भगवतीदास ने इनका पदोत्सव किया था। जिनललितसूरि (१८वीं सदी) बोरबडी निवासी बोथरा गोत्रीय शाह ताराचन्द फतरचन्द ने इनका पदोत्सव किया था। जिनचन्द्रसूरि (१९वीं) के समय में - लखनऊ निवासी नाहटा गोत्रीय राजा वच्छराज, चण्डालिया वसन्तराय श्रीमाल, भाण्डिया हकीम देवीदास, टांक भूपति राय, अजमेर निवासी शंखवालेचा गोत्रीय महमिया रूढ़मल्ल, अनूपचन्द मूलचन्द आदि। सं. १८६९ लूणिया गोत्रीय त्रिलोकचन्द और गिड़िया गोत्रीय राजाराम के संघ के साथ शत्रुञ्जय तीर्थ की यात्रा की थी। दिल्ली में लाहौर निवासी शंखवालेचा गोत्रीय माणकचन्द, भाण्डिया हजारी, लखनऊ के भाण्डिया देवीदास, पहलावत, महानन्द, नौबतराय, महिमवाल सदासुख, जागा गोत्रीय मन्नुलाल आदि आपके भक्त थे। जिनकल्याणसूरि (२०वीं सदी) के समय में - पारसान प्रतापचन्द, कानपुर के संतोषचन्द भण्डारी, जिन्होनें शीशे का मन्दिर बनवाया था आदि। जिनचन्द्रसूरि (२०वीं) के समय में - कलकत्ता के रायबहादुर सेठ बद्रीदास इनके परम भक्त थे। बद्रीदासजी ने कलकत्ता में कॉच का मन्दिर बनवाया जो आज 'बद्रीदास टेम्पल' के नाम से विश्व-प्रसिद्ध है।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

卐 मण्डोवरा शाखा - जिनमहेन्द्रसूरि के उपदेश से जेसलमेर निवासी बाफणा गोत्रीय बहादरमल- सवाईराम-मगनीराम-जोरावरमल-दानमल आदि ने पाली से शत्रुञ्जय महातीर्थ का यात्रा संघ विक्रम संवत् १८९१ में निकाला था। इस संघ में ११ श्रीपूज्य और साधु-साध्वियों की संख्या २१०० थी। इस संघ की सुरक्षा के लिए अंग्रेज, जावरा नवाब, टोंक नवाब, जोधपुर नरेश, कोटा नरेश आदि की ओर से तोप सहित सैन्य भी शामिल था। यही बाफणा जेसलमेर के पटवा कहलाते हैं और जेसलमेर में इन पाँचों भाईयों की पाँचों हवेलियाँ आज भी पटवा हवेली के नाम से जग प्रसिद्ध है। बम्बई निवासी सेठ मोतीशाह नाहटा के द्वारा निर्मापित सेठ मोतीशाह मन्दिर, शत्रुञ्जय की प्रतिष्ठा भी आप ही ने करवाई थी।

जेसलमेर के महारावल गजसिंह, और मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह और कोटा नरेश भी इनको बहुत सम्मान देते थे। जिनमुक्तिसूरि के समय में - विक्रम संवत् १९१५ में लखनऊ निवासी नाहटा, भूपहजारीमल गाँधी, छुट्टनलाल, प्रेमचन्द आदि ने आपका पदोत्सव किया था। पोकरण के ठाकुर चाम्पावत फतेहसिंह आपके ही आशीर्वाद से जयपुर के दीवान बने थे। जोधपुर के महाराजा तखतसिंह आपके भक्त थे। रतलाम के सेठ सोभागमल चांदमल बाफणा भी आपके भक्तों में थे।

卐 कीर्तिरत्नसूरि - ये शंखवालेचा गोत्र के थे और इन्हीं के भाई सेठ मालीशाह ने नाकोड़ा में शान्तिनाथ मन्दिर का निर्माण करवाया। इन्हीं कीर्तिरत्नसूरि ने नाकोड़ा महातीर्थ की स्थापना की। जिनकृपाचन्द्रसूरि के परम भक्तों में सेठ मोतीशाह के वंशज रतनचन्द खीमचन्द, मूलचन्द हीराचन्द, प्रेमचन्द कल्याण, केसरीचन्द कल्याणचन्द ने विक्रम संवत् १९७२ में आपका चातुर्मास लालबाग बम्बई में करवाया था। सूरत के सेठ पानाचन्द भगुभाई, फतेहचन्द प्रेमचन्द, आपके

प्रमुख भक्त थे और जिनदत्तसूरि ज्ञान भण्डार की स्थापना आपने ही की थी।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

卐 मुनि मोहनलालजी महाराज - संवत् १९४९ में मुर्शिदाबाद निवासी धनपतिसिंह दूगड़ द्वारा शत्रुञ्जय में निर्मापित धनवसही के प्रतिष्ठापक आप ही थे। संवत् १९६१ में कलकत्ता के रायबहादुर बद्रीदास मुकीम, रतलाम के सेठ चांदमलजी पटवा, ग्वालियर के राय बहादुर नथमलजी गोलेछा और फलोधी के फूलचन्दजी झाबक आदि आपकी आज्ञा को स्वीकार करते थे। जिनरत्नसूरि - आपके उपदेश से भुज से वसनजी वागजी ने भद्रेश्वर का संघ निकाला। सेठ रवजी सोजपाल, मेघजी सोजपाल, मूलचन्द हीराचन्द भगत, संघपति चांदमलजी चोपड़ा, जावरा के प्यारचन्दजी पगारिया, भुज के हेमचन्दभाई आदि आपके मुख्य भक्त थे।

卐 मन्त्री/दीवान के पद पर शोभित खरतरगच्छीय उपासक

बीकानेर नगर के निर्माण में खरतरगच्छीय उपासकों को बहुत बड़ा हाथ रहा है। राव बीकाजी के मन्त्री वत्सराज थे, जिन्होंने दुर्ग निर्माण और मोहल्लों को मर्यादित कर बसाने में बहुत दूरदर्शिता से काम लिया था। राव लूणकरणजी के मन्त्री कर्मसिंह थे, जिन्होने नमिनाथ मन्दिर बनवाकर जिनहंससूरिजी से प्रतिष्ठा करवाई थी। राव जयतसीजी के मन्त्री वरसिंह और नगराज थे। राव कल्याणमल्लजी के मन्त्री संग्राहसिंह व कर्मचन्द्र बच्छावत थे तथा राजा रायसिंहजी के मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र थे।

प्रतिष्ठा लेख संग्रह (द्वितीय खण्ड) लेखांक ३७३ के अनुसार सांडेचा गोत्रीय रायमल के पुत्र जीवराज संघवी जो कि आमेर देशाधिपति के द्वारा प्रदत्त दीवान पद के धारक थे। उनके पुत्र मोहनराम रामगोपाल ने जयपुर में मोहनवाड़ी में जिनकुशलसूरिजी के चरणों की स्थापना की थी। जयपुर के इतिहास में यह पहले दीवान थे जो कि श्वेताम्बर थे। इनके पुत्र मोहनराम के नाम से ही यह मोहल्ला मोहनवाड़ी के नाम से ही जयपुर में प्रसिद्ध है। जयपुर के दूसरे दीवान नथमलजी गोलेछा हुए जिनको कि नथमलजी का कटला जो आज अग्रवाल कॉलेज के नाम से प्रसिद्ध है।

卐 कलकत्ता के राय बहादुर बद्रीदास - खरतरगच्छ के परम भक्त थे। कलकत्ता के वायसराय भी इनके घर आते-जाते थे। सम्मेतशिखर के मुकदमे में श्वेताम्बर समाज की ओर से अग्रगण्य बद्रीदासजी ही थे। संवत् १९६२ में सुप्रीम कोर्ट लंदन के फैसले से सम्मेतशिखर पहाड़ श्वेताम्बरों के हस्तगत हुआ था। अतः समस्त श्वेताम्बर समाज इनका ऋणी है। उस समय बद्रीदासजी को यह विजय इष्टसाधना के बल पर प्राप्त हुई थी और इस इष्टसाधना के साधक थे पूज्य श्री मणिसागरजी महाराज।

कोटा के दीवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी बुद्धसिंहजी बाफणा, चेन्नई (फलौदी) के चौधरी सुखलालजी झाबक, लालचन्दजी ढड्ढा, मोहनचन्दजी ढड्ढा, फलौदी के फूलचन्दजी झाबक, बीकानेर के चाँदमलजी ढड्ढा, मंगलचन्दजी झाबक, हैदराबाद के इन्द्रचन्दजी सुरेन्द्रकुमारजी लूणिया, कपूरचन्दजी श्रीमाल, बीकानेर के भैंरुदानजी कोठारी, अगरचन्दजी भंवरलालजी नाहटा, दिल्ली के श्री जवाहरलालजी राक्यान एवं श्री हरखचन्दजी नाहटा, जयपुर के सोहनमलजी महताबचन्दजी गोलेछा, राजरुपजी दुलीचन्दजी टांक, राजमलजी कुशलचन्दजी विमलचन्दजी सुराणा, कलकत्ता के परीचन्दजी बोथरा, अजमेर के रामलालजी अमरचन्दजी लूणिया आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। स्थानाभाव के कारण कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के नाम नहीं दिये जा सके हैं।

(खरतरगच्छ साहित्य कोश की प्रस्तावना से
आंशिक संशोधन सहित साभार)

स्मृति शेष

# कैलाश सदा याद रहेगा

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

बहुत छोटी उम्र में कैलाश चला गया। उसके जाने की पीड़ा होना स्वाभाविक है। हाँलाकि आयुष्य कर्म की पूर्णाहुति पर जाना ही होता है। उसे रोका नहीं जा सकता।

मेरा परिचय पादरु चातुर्मास से प्रारंभ हुआ। उसके दादा श्री धर्मचंदजी संखलेचा पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त थे। वि. सं. 2015 के चेन्नई चातुर्मास में उनका पूज्यश्री के निकट आना हुआ था। धर्मचंद मुल्तानमल नामक जानी पहचानी पेढी के वे मालिक थे। कैलाश के पिताजी श्री भंवरलालजी संखलेचा पूज्य आचार्यश्री के व हमारे परम भक्त रहे।

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री के स्वर्गवास के बाद हमाराप हलाच ातुर्मासप ादरून गरम ेंह ुआथ ा।उ स समय यह परिवार हमारे संपर्क में आया। परिचय घनिष्टता में बदला। पूरे परिवार की भक्ति मिली। श्री भंवरलालजी के साथ-साथ उनके चारों पुत्र- ललित, राजू, कैलाश व गौतम सभी का अपनत्व भरा प्रेम व समर्पण भरी श्रद्धा हमें मिली। उस समय कैलाश की उम्र लगभग 15 वर्ष रही होगी। मेरे पास नियमित आना, बैठना, पढना, यह सब चारों महिने चलता रहा। पू. माताजी म., बहिन विद्युत्प्रभा आदि का चातुर्मास भी साथ ही होने से वह बहिन म. से भी उतना ही जुड़ा। वह घर में कम रहता, मेरे पास या साध्वीजी म. के उपाश्रय में ही मिलता। गाथा याद करता।

अपने घर में उसने घोषणा कर दी थी कि मैं पूज्यश्री के साथ विहार में रहूँगा। चातुर्मास पूर्णता के पश्चात् विहार में वह हमारे साथ रहा।

15 वर्ष की उम्र में पूर्ण स्वस्थ और राजकुमार

की तरह मनमोहक दिखाई देने वाले कैलाश पर अचानक अशाता वेदनीय कर्म का जबरदस्त हमला हुआ। वह छोटी उम्र में व्याधिग्रस्त हो गया। चारित्र ग्रहण की उसकी भावना अस्वस्थता के कारण साकार नहीं हो पाई।

मधुमेह, रक्तचाप, वजन-अल्पता आदि रोगों से वह ग्रस्त हो गया। चारित्र नहीं ले पाया, पर वह आजीवन मेरा शिष्य बना रहा। मेरे इंगिताकार के आधार पर वह अपनी चर्या निर्धारित करता।

कुछ समय बाद आँखों की रोशनी भी अल्प हो गई। पर उसका मनोबल कभी कम नहीं रहा।

पिता श्री भंवरलालजी ने गज मंदिर के लिये बहुत परिश्रम किया था तो कैलाश का एकमात्र लक्ष्य जहाज मंदिर हो गया। जहाज मंदिर उसके रोम-रोम में बसा था।

वह हमेशा कहता- मेरा जहाज मंदिर कैसे चमके! वहाँ अधिक से अधिक यात्रियों का आवागमन कैसे हो! व्यवस्थाओं की अपेक्षा से उसमें और निखार कैसे आये!

अन्तिम क्षण तक उसके मन मानस में मेरा और जहाज मंदिर का नाम था। मैं सूरिमंत्र की साधना में था। पीछे यह दुखदायी घटना घट गई। कुछ पलों के लिये मन बहुत खिन्न

और उदास हो गया। अपने मन को कैसे समझाना कि कैलाश अब नहीं रहा।

पिछले दो वर्षों से वह जीरावला मंदिर दादावाडी के कार्य में पूर्ण रूप से लगा हुआ था। उसकी एक ही तमन्ना थी कि जीरावला की प्रतिष्ठा मेरे सामने हो।

वह अपने गिरते स्वास्थ्य के कारण चिंतित था। वह समझ रहा था कि मेरा शरीर धीरे-धीरे साथ छोडने की तैयारी कर रहा है। इसलिये वह बार-बार कहता- गुरुदेवश्री! जीरावला का कार्य जल्दी कराओ।

उसने घर बैठे-बैठे फोन पर प्रेरणा करके जीरावला के लिये विशाल अर्थ संग्रह करवा दिया था। जीरावला से संबंधित कितने ही लाभ उसने फोन पर तय कर दिये थे। उसके विनय व माधुर्य भरे वचनों का ही यह पुण्य था कि वह जिसे भी कहता, स्वीकार कर लेता।

वह अपने स्वास्थ्य के बारे में कम सोचता, जहाज मंदिर और जीरावला के बारे में ज्यादा चिन्तित रहता। नई-नई योजनाऐं बनाता। वह कहता- मंदिर, दादावाडी, भोजनशाला, धर्मशाला सब कुछ अत्यन्त आधुनिक व आकर्षक होने चाहिये। पैसों की कोई चिन्ता नहीं है। मैं बैठे-बैठे सब कर लूंगा। उसके शब्दों में आत्म-विश्वास की मजबूत खनक थी।

शारीरिक अस्वस्थता में भी पूर्ण रूप से मानसिक स्वस्थता के साथ हर पल प्रसन्न रहना और जिम्मेदारी के साथ पूरा काम करना, कैलाश की बहुत बडी अनुमोदनीय विशिष्टता थी। ऐसा सक्षम युवा विरला होता है। पूर्व जन्म की पुण्याई साथ लेकर आया था, जो ऐसा विशिष्ट मन उसे मिला। अस्वस्थता उसे दु:खी करने के बजाय उसके कर्मों की निर्जरा का निमित्त हो गई।

उसके स्वर्गगमन से हमने एक अनमोल रत्न खो दिया है। प्रतिपल उसका विनय, समर्पण, प्रेम, लगन व लगाव भरा चेहरा आँखों के सामने रहता है। उसका अभाव सदा-सदा खटकेगा।

अपने सत्कार्यों के परिणामस्वरूप उसने सद्गति ही पाई होगी। उसकी आत्मा शीघ्र ही कर्मक्षय कर मुक्ति का वास करे... संखलेचा परिवार को यह पीडा सहन करने की क्षमता मिले... यही प्रभु से प्रार्थना है।

स्मृति शेष

# अपूरणीय क्षति

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री जी म.

सदैव की तरह मैं अपने साधना कक्ष में जप कर रही थी। सपरिवार सूर्य नभोमंडल से अपनी प्रकाश किरणें धरती पर फैला रहा था। अचानक मुझे सूचना मिली कैलाश संकलेचा का स्वर्गवास हो गया है। सुनकर मैं हत्प्रभ रह गयी। विगत तीन दशक से भी ज्यादा समय से कैलाश मेरे परिचय में था।

सन् 1986 का मेरा चातुर्मास पू. भाई म. तत्कालीन मुनि श्री मणिप्रभसागरजी के सानिध्य में पादरू में गतिमान् था। गुरुदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के स्वर्गवास होने के बाद यह उनका प्रथम चातुर्मास था।

उसी चातुर्मास में भंवरलालजी संकलेचा परिवार से मेरा परिचय हुआ। यह परिवार आचार्यश्री का वर्षों से जुड़ा हुआ परिवार था। अति श्रद्धालु परिवार...। गुरुदेव के प्रति उनकी श्रद्धा अब गुरुदेव के प्रधान शिष्य में स्थापित हो गयी।

श्रद्धेय भाई म. भी उनके प्रति अत्यन्त वात्सल्य भाव रखते थे। तीसरे नम्बर का पुत्र कैलाश उस समय 15/16 साल की उम्र का था। बचपन से ही माता-पिता का अत्यन्त दुलारा, पढने में सामान्य! मैंने उसे हमारे सानिध्य में रहकर धार्मिक शिक्षा की प्रेरणा दी।

कुछ समय वह मेरे पास जोधपुर में रहा भी पर उसके स्वास्थ्य ने साथ नहीं दिया। उस समय उसे ऑखों की तकलीफ शुरु हो गयी थी। शरीर में सूजन आना सामान्य बात थी। आखिर उसे घर जाना पड़ा था।

जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ रही थी, शारीरिक वेदना बढ़ती जा रही थी। फिर भी मैंने अनुभव किया था कि उसकी सहिष्णुता और इच्छाशक्ति गजब थी।

यद्यपि वह अब चैन्नई में व्यापार से जुड गया था परंतु पू. गुरुदेवश्री के प्रति उसकी श्रद्धा निरंतर गहरी होती जा रही थी। जब सन् 2005 में हमारा चातुर्मास चैन्नई था तो लगातार वह पूज्यश्री के सानिध्य में रहा करता था।

गुरुदेव ने उसकी श्रद्धा एवं पुरुषार्थ का मूल्यांकन करते हुए जहाज मंदिर ट्रस्ट से जोड़ा। अब तो जैसे उसकी श्रद्धा और निष्ठा को पंख लग गये। अब उसका सारा ध्यान जहाज मंदिर की ओर केन्द्रित हो गया। गुरुदेव की निश्रा में चल रही समस्त योजनाओं का बारीकी से वह अध्ययन करता और फिर अपने परिचय का उपयोग करते हुए लाभ लेने का निवेदन करता।

मुझे एक बार हंसते हुए विरेन्द्रजी सा. मेहता ने बताया था कि जब भी कैलाशजी का फोन आता है, उनके बोलने से पूर्व ही हम पूछ लेते हैं कि कहिए कहाँ कितना लिखाना है?

कैलाश कहा करता था- मैं शरीर की अपेक्षा से किसी

भी क्षेत्र में इतना उपयोगी नहीं हो पा रहा हूँ तो कम से कम अपनी जुबान का उपयोग करके दान के क्षेत्र में अगर कुछ सार्थक कर पाता हूँ तो यह मेरा परम सौभाग्य है।

जहाज मंदिर मासिक पत्रिका का जब भी विशेषांक प्रकाशित होता, उसका सारा उत्तरदायित्व कैलाश का होता था। विज्ञापन विभाग वही देखता था। सबको सूचना देना... व्यवस्थित सारी राशि जहाज मंदिर भिजवाना... उसका बाकायदा हिसाब रखना... सब कुछ अस्वस्थ होते हुए भी वह संभाल लेता था।

गणाधीश विशेषांक, आचार्य पद विशेषांक के विज्ञापन तो पूरी तरह उसी के परिश्रम की परिणति थी। विज्ञापन विभाग इतना बखूबी संभालता था कि लाभार्थी को कभी पूछना नहीं पड़ता था। कई बार मैं सोचा करती थी कि ऐसी क्या विशिष्टता है कि वह अपने परिश्रम और पुरुषार्थ से बड़ी-बड़ी राशि लिखवा देता है।

अभी साल भर पूर्व चित्तोड् जिनमंदिर-दादावाडी की प्रतिष्ठा थी, उस समय भी गुरुदेव का संकेत पाकर उसने मूर्तियाँ भराने में अपना पुरुषार्थ नियोजित किया था।

उसका स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरता जा रहा था पर उसका साहस दाद योग्य था। इतनी गंभीर असाध्य बिमारी में भी उसका चेहरा सदैव मुस्कुराता ही नजर आता था। जब भी स्वास्थ्य के बारे में पूछते उसका उत्तर होता आपकी और गुरुदेव की कृपा है। गुरुदेव की कृपा के बल पर ही मैं जिन्दा हूँ। शारीरिक कष्ट की कोई सीमा नहीं है परंतु गुरुकृपा के कारण सहन करने की शक्ति मुझे प्राप्त हो रही है।

वह जब भी आता, मेरी एक आँख उसके कष्ट भरे तन को देखती और दूसरी आँख उसके शांत, प्रसन्न और आनंद भरे चेहरे को देखती। इतनी वेदना में भी मैंने कभी उसकी आँख में आँसु नहीं देखे। मैं उसके भावों की शांत परिणति पर अहोभाव से भर जाती। उसने यद्यपि अधिक स्वाध्याय नहीं किया था, न तत्त्वज्ञान की गहराई उसमें थी पर भावों में गुरु कृपा की ऐसी अलख जगी थी कि इतनी भयंकर शारीरिक वेदना भी उसे दु:खी नहीं कर पायी थी।

जहाज मंदिर तीर्थ उसकी रग-रग में बसा हुआ था। उसकी व्यवस्था में उसकी जागरूकता अनुमोदनीय थी। जहाज मंदिर में आने वाले यात्रियों को पूर्ण संतुष्टि हो, वह उसके लिए सदा प्रयत्नशील रहता था।

उसके जीवन का सबसे अनमोल योगदान बना जीरावला तीर्थ में मंदिर, दादावाडी निर्माण में उसकी भूमिका। उसकी रुचि, श्रद्धा और भावना को समझते हुए गुरुदेव ने दो वर्ष पूर्व बीकानेर में सूरिमंत्र की पीठिका समापन के अवसर पर उसे जीरावला मंदिर, दादावाड़ी के संयोजक के रूप में नियुक्त किया था।

जीरावला में चाहे परमात्मा भराने का कार्य हो या दादा गुरुदेव के बिम्ब भराने हो अथवा अधिष्ठायक देव-देवी बिम्ब भराने हो, फोन करके उसी ने प्राय: सब लाभार्थी तैयार किये थे।

जीरावला तीर्थ के भव्य निर्माण का सपना कैलाश के रोम-रोम में रम गया था। वह कभी मुझे तो कभी गुरुदेव को समाचार देता था कि जल्दी से जल्दी जीरावला का कार्य प्रारंभ कराओ।

यह उसका सौभाग्य था कि जीरावला तीर्थ का शिलान्यास कार्यक्रम उसने अपनी आँखों से देख लिया। उसके हृदय में इतना उत्साह था कि स्वास्थ्य पूरी तरह प्रतिकूल होते हुए भी वह शिलान्यास कार्यक्रम में पहुंचा। जिस समय शिलान्यास हुआ, उसकी आँखों में अपार हर्ष था। उसने अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा था- आप सभी ने मेरे हृदय को आज अपार खुशियाँ दी है। आपके उपकारों को मैं कभी नहीं भूल पाऊंगा। मैं अब चला जाऊँ तो भी कोई चिन्ता नही है। मेरा सपना साकार होना प्रारंभ हो गया है। बस एक ही तमन्ना है कि मुझे मुक्ति पर्यंत आप ऐसे ही संभालना।

वह हॉस्पीटल में भर्ती था। मुझे विश्वास था कि वह जीरावला की प्रतिष्ठा का इंतजार करेगा पर आयुष्य कर्म ने साथ नहीं दिया और वह विदा हो गया। उनके जाने से हमारे संघ में अपूरणीय क्षति हुई है। दिवंगत आत्मा सद्गति को प्राप्त करे, यही मंगल कामना।

स्मृति शेष

# युवा रत्न श्री कैलाशजी संकलेचा की विदाई

चैन्नई 7 अक्टुंबर। जिनशासन का सच्चा सेवक एवं युवा सितारा, सेवाभावी सुश्रावकवर्य श्री कैलाश संकलेचा सुपुत्र श्री भंवरलालजी संकलेचा (पादरू वाले) का आकस्मिक निधन हो गया। आपके निधन के समाचार मिलते ही जैन समाज में शोक की लहर दौड़ पड़ी। आपका अंतिम संस्कार चैन्नई में किया गया।

धर्म और संघ की सेवा के पथ पर सदैव अग्रसर श्री संकलेचा श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट पादरु के अध्यक्ष, जहाज मंदिर मांडवला के प्रचार मंत्री, जीरावला में निर्माणाधीन दादाबाड़ी प्रकल्प के संयोजक आदि अनेक संस्थाओं से गहरे जुड़े हुए थे।

दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी के भक्त ऐसे श्री कैलासजी पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के प्रति अटूट आस्थावान थे। आपने अनेकों स्थानों पर निर्माण कार्यों में आगेवानी लेकर देव-गुरु तत्त्व की भक्ति के साथ जिनशासन की महती प्रभावना की है।

पिताश्री भंवरलालजी द्वारा प्रदत्त धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत श्री कैलासजी साधर्मिक भक्ति एवं जीवदया के कार्यों में गहरी रुचि रखते थे। श्री कैलाश संकलेचा के आकस्मिक निधन से न केवल खरतरगच्छ बल्कि सम्पूर्ण जिनशासन की अपूरणीय क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

**संकलेचा परिवार का अनमोल रत्न**

आसोज शुक्ला अष्टमी की वो रात जब चाँद आसमां पर चांदनी बिखेर रहा था, वही रात मेरी जिंदगी की अंधेरी रात बन गई। जब मेरा प्रिय भाई व मार्गदर्शक सदा-सदा के लिए मुझसे बिछड़ गया।

जिसने हमारी तीन पीढ़ियों की श्रद्धेय गुरु परम्परा को पिताजी के देहावसान के पश्चात् पूरे समर्पण के साथ निभाया व देव-गुरु की आराधना में जुड़ने की प्रेरणा दी!

बचपन से ही वो पूज्य खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. से जुड़ा हुआ था और उनके हर निर्देश को आदेश के रूप में लेकर कार्य करता था। गुरुदेव के हर आदेश का पूरी तन्मयता से पालन करते हुए मैंने स्वयं देखा है! शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद जहाज मन्दिर के प्रत्येक कार्य को पूरी लगन से करता था। गुरुदेव के प्रति निष्ठा व समर्पण उसने खुद के साथ-साथ मुझमें भी डाले थे। गुरुदेव के चातुर्मास प्रवेश से लेकर हर कार्यक्रम में पिछले 6-7 सालों से मुझे भेजकर अपनी श्रद्धा की अभिव्यक्ति करवाता रहा। और साथ ही कहता कि मैं स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण जा नहीं पाऊंगा इसलिए तुझे तो जाना ही है। गुरुदेव के प्रति ऐसा समर्पण जो मेरे भाई में था वैसा तो कैलाश जैसे व्यक्तित्व के पास ही हो सकता है।

इतनी छोटी उम्र में भी पादरु दादावाडी के अध्यक्ष, जहाज मंदिर के सचिव, जीरावला दादावाडी निर्माण समिति के संयोजक, जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी व प्रतिनिधि महासभा के ट्रस्टी के रूप में कार्यरत थे। तुमने इतनी अल्प आयु में भी पिताजी व हमारे परिवार का नाम रोशन किया है। पूरे परिवार को हमेशा तुम पर गर्व रहेगा। भाई कैलाश ने अभी-अभी जीरावला में जो दादावाड़ी निर्माण की

योजना में लोगो को प्रेरित कर उन्हें जोड़ने का जो कार्य किया वो अनुमोदनीय व अनुकरणीय है!

अभी तो जीरावला दादावाड़ी की प्रतिष्ठा करानी थी।श ासनक ेब हुतक ार्यक रनेथ ो।प ूरेप रिवारक ो तुम्हारी जरूरत थी। आज तुम्हारे बिना हर चीज अधूरी लग रही है!

भाई! तुम्हारी गुरु-निष्ठा व समर्पण, जहाज मंदिर का कार्य हो या पादरु दादावाडी का कार्य, सभी में मैं हमेशा तेरा सहयोगी रहा फिर भी भाई इतनी भी क्या जल्दी थी तुम्हें जाने की!

भाई कैलाश खरतरगच्छाधिपति श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा तुम्हें दिये हर कार्य को हम गुरुदेव के आशीर्वाद से पूरे करने में सहभागी बन सके यही तुम्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-गौतम संकलेचा चैन्नई

## क्षति का आपूर्ति नामुमकिन

संसार में कोई स्थाई नहीं है। जो आया है उसे एक दिन जाना है। अपने मंडल के सदस्य कैलाशकुमार संकलेचा के आकस्मिक निधन से जो क्षति हुई है उसकी आपूर्ति करना मुमकिन नहीं।

अपने मंडल द्वारा वस्तु-वितरण के तहत रविवार ता. 13-10-19 को दया सदन में सामग्री वितरण सुबह 7:00 बजे व उसके पश्चात मद्रास पिंजरापोल में गौ-सेवा का कार्यक्रम श्री कैलाशकुमारजी संकलेचा की पुण्य स्मृति में श्रीमती मोहिनीदेवी भंवरलालजी संकलेचा परिवार (मरुधर में पादरु) की तरफ से रखा गया।

-श्री सिवांची जैन युवा मंडल

**निष्ठावान कार्यकर्ता** श्री कैलाशजी के निधन से सभी को पीड़ा की अनुभूति हुई। संघ व समाज में इस क्षति की निकट भविष्य में पूर्ति होना कठिन है।

-भूरचन्द जीरावला, जोधपुर

## कैलाश पर्वत की तरह

श्री कैलाश भाई पर्वत की तरह अडिग थे। इतने बिमार होने के बावजूद भी बिना किसी संकोच समाज सेवा करने में हमेशा आगे रहने के साथ लोगों को हमेशा सही रास्ता बतलाया। आज पादरु नगर ने अनमोल रतन खो दिया। जिनकी हमेशा कमी खलती रहेगी। उनके जीवन काल के अधूरे कार्य पूरे कर उनको सच्ची श्रद्धांजलि देवें।

-पुखराज कवाड़ हैदराबाद

## दिल से विदाई कभी संभव नहीं

परम गुरुभक्त श्री कैलाश भाई के अवसान दिवस पर हार्दिक श्रद्धांजलि। जीरावला तीर्थ में जिनमंदिर एवं दादावाड़ी का निर्माण जिनका सपना था। और उसके लिए पूर्ण समर्पित होकर प्रयत्न किया। उनका स्वप्न जल्दी से जल्दी पूर्ण होकर नव इतिहास का सृजन हो। जब जब जीरावला दादावाड़ी को देखेंगे तब तब कैलाश भाई की अविस्मरणीय स्मृति हो आएगी। नम आंखों से परम गुरुभक्त को विदाई जिसकी दिल से विदाई कभी भी संभव नहीं।

-रमेश लुंकड़, इचलकरंजी

## पूर्वाभासी कैलाश भाई

कैलाश भाई का व्हाट्सप स्टेटस पढ़ कर लगा शायद इन्हें पहले से ज्ञान हो गया था। ('जिंदगी भले ही छोटी देना हे ईश्वर मगर ऐसी देना की मुद्दतों तक लोगों के दिल में जिंदा रहूं।') कैलाश भैया का ऐसे जाना समस्त खरतरगच्छ समुदाय की क्षति है।

-दीपक चोपड़ा दुर्ग

**श्री कैलाशजी संकलेचा** का अचानक यूं हम सबके बीच में से जाना हम सभी के लिए एक अपूरणीय क्षति है। आपका समर्पण भाव कई उभरते शासन प्रेमियों के लिए मार्गदर्शक था... आपके जैसा गच्छाधिपतिजी के प्रति एवं जहाज मंदिर के प्रति लगाव व अथाह प्रेम रखने वाला व्यक्तित्व बहुत मुश्किल से मिलेगा... विगत वर्षों में जब भी आपसे चर्चा हुई आपके लबों पर गुरुदेव तथा जहाज मंदिर का नाम अवश्य आता था।

# दादा गुरुदेव के अनन्य भक्त

## श्री कैलाशकुमार भंवरलालजी संकलेचा

को

## हार्दिक श्रद्धांजलि

जनप्रतिनिधि बनकर की गई आपकी शासन-सेवा
प्रकाश-स्तंभ की तरह मार्गदर्शन करती रहेगी।
आपकी आत्मा शीघ्र शाश्वत स्थान को
प्राप्त करे यही शुभ भावना।

सादर भावांजलि

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मंदिर मांडवला ( राजस्थान )

❋

श्री जीरावला पार्श्वनाथ दादावाडी ट्रस्ट,
जीरावल ( राजस्थान )

पावन पदार्पण पूज्य गच्छाधिपतिश्री का

सूरिमंत्र की साधना

संचालन मुनि मनितप्रभसागरजी म. द्वारा

पूज्य मुनि विरक्तप्रभसागरजी म. द्वारा गुरुमहिमा

पूज्य मुनि महितप्रभसागरजी म. द्वारा उद्‌बोध

गुरुपूजन श्री भंवरलालजी छाजेड परिवार द्वारा

गुरुवंदना संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा द्वारा

पुस्तक विमोचन राजेन्द्रजी संचेती जयपुर द्वारा

पुस्तक विमोचन
मांगीलालजी मालू मालेगांव द्वारा

पुस्तक विमोचन नवरतनमलजी गोलेच्छा धमतरी द्वारा

सानिध्यता साध्वीजी भगवंत

मुहूर्त्त हेतु निवेदन मुमुक्षु पायल बागरेचा द्वारा

श्रद्धासिक्त उल्लसित जनसमूह

# गिरनार तीर्थ में बनेगा खरतरगच्छ का विशाल परिसर
# लाभ लिया डोसी परिवार ने

धुले 20 अक्टुंबर। गिरनार तीर्थ में विशाल भूखण्ड क्रय कर वहाँ जिनमंदिर, दादावाडी, भैरव मंदिर, धर्मशाला, भोजनशाला, उपाश्रय आदि का निर्माण किया जायेगा।

भूखण्ड से लेकर संपूर्ण निर्माण का लाभ संघमाता इचरजदेवी चंपालालजी डोसी के आशीर्वाद से संघवी श्री सुगनचन्दजी प्रेमचन्दजी विजयराजजी सौ. प्रेमलतादेवी, पुत्र हंसराजजी सौ. अरुणा, कुशलराजजी सौ. पमिता, प्रियंका प्राक्षि भाविक, बेटा पोता पडपोता श्री चन्दनमलजी डोसी परिवार खजवाणा-बैंगलोर वालों ने लिया है।

यह घोषणा धूलिया नगर में पूज्य गुरुदेव श्री के महामांगलिक अवसर पर की गई।

पूज्य आचार्यश्री ने फरमाया- संघवी श्री विजयराजजी हमारे संघ व गच्छ के आगेवान सुश्रावक है। हमारे प्रति अनन्य भक्ति है। आपने बैंगलोर में उपधान तप का आयोजन करवाया। खजवाणा से नाकोडाजी तीर्थ का पैदल संघ आयोजित किया। इसके अलावा हर स्थान पर उनका योगदान रहता है। पालीताना में संपन्न हुए वर्षीतप पारणा महोत्सव उनके ही संयोजनत्व में संपन्न हुआ। बाडमेर कुशल वाटिका की प्रतिष्ठा में आपका मार्गदर्शन रहा। चार वर्ष पूर्व पालीताना में संपन्न हुए विराट् खरतरगच्छ महासम्मेलन को सफल बनाने में आपका बडा योगदान रहा। कार्यक्रम को सफल बनाने की आपकी विशिष्ट कला है। संघवी श्री विजयराजजी ने इसे पूज्यश्री का ही आशीर्वाद बताया और कहा- यह उनकी कृपा का ही परिणाम है। संघ की ओर से डोसी परिवार का अभिनंदन किया गया।

# नवमी पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

तू लौट आ माँ, तेरी याद बहुत आती है।

ये घर घर न रहा, तेरे जाने के बाद मकान हो गया।

काम पर जाता हूँ तो लौट आने का दिल नहीं करता।

यहाँ गूंजती है तेरी आवाज और मैं हूँ सन्नाटों से डरता।

क्यों इतना दूर गयी मुझसे कि अब याद ये तेरी रुलाती है,

मैं जानता हूं अब न आएगी,

फिर भी ये दिल की धड़कन तुझे बुलाती है।

हो सके तो तू लौट आ माँ, तेरी याद बहुत आती है।

**तुम्हारे लाडले : रोहित, पूजा और रीतिक**

**श्रीमती सवितादेवी**
**शांतिलालजी मेहता**
**जन्म : 03.06.1973**
**स्वर्गवास : 06.12.2010**

ऐसे विकट समय पर परिवार के सदस्यों की पीड़ा का कोई पार नहीं होता है, परन्तु आप सभी से भी प्रार्थना करते हैं कि कैलाशजी के अधूरे छोड़े गए कामों को उन्हीं भावों से पूर्ण करें तो उस दिवंगत पुण्यात्मा को यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

–मनीष नाहटा, केयुप दिल्ली शाखा एवं श्री जैन खरतरगच्छ समाज, दिल्ली

**कैलाशजी संकलेचा,** श्रम साध्य व्यक्तित्व थे। पूरे जीवन पर्यन्त खरतरगच्छ जैन समाज की सहृदय से सेवा की है। श्री कैलाशजी ने सामाजिक संगठन के लिए काफी कार्य किया है। इनकी जीवन क्षति समाज की क्षति है। विनम्र श्रद्धांजलि।

–शिल्पा सिंघवी मुम्बई

**अपूरणीय क्षति**

हमारे आदरणीय सुश्रावक परम गुरुभक्त नूतन जीरावला जिनमंदिर व दादावाड़ी के संयोजक जहाज मंदिर मांडवला के सचिव व अखिल भारतीय खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के ट्रस्टी, श्री शीतलनाथ जिनमंदिर व जिनकुशलसूरि दादावाड़ी पादरू के अध्यक्ष, चेनई जैन श्री संघ के उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता सरल स्वभावी मधुर भाषी कर्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता श्री कैलासजी संखलेचा चेनई का स्वर्गवास हो गया है यह समाचार सुनकर दिल आहत हो गया।

यह जिनशाशन के लिए अपूरणीय क्षति है।

–चम्पालाल पीरचंदजी वडेरा इचलकरंजी

**पूजनीय भाई** श्री कैलाशजी का समाचार मिला सुनकर बहुत दु:ख हुआ, ईश्वर के विधान के आगे आप हम सभी नतमस्तक है। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि स्वर्गवासी आत्मा को शांति व चिरस्थायी स्थान प्रदान करे। इस घड़ी में हम सपरिवार आपके साथ है।

–प्रदीप पारख, जेठिया ग्रुप इरोड़

**आदरणीय** कैलाशचंदजी भाई साहब के निधन से हम सभी शोक संतप्त हैं। उनका सरल स्वभाव, मिलनसार, प्रभावी व्यक्तित्व स्मृति पटल पर अंकित है।

–सरोज जैन, केएमपी राजनांदगांव

**जिन शासन के लिए एक अनमोल क्षति**

श्री कैलाशजी के स्वर्गवास का संदेश पाकर स्तब्ध हूं। परमात्मा एवं दादा गुरुदेव उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

–प्रदीप श्रीश्रीमाल मुम्बई

**अपूरणीय क्षति**

आज हमने एक समर्पित रत्न खो दिया। परमात्मा भाई कैलाशजी संकलेचा की आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

–धनपत कानूनगो मुम्बई

जीरावला दादावाड़ी, जहाज मंदिर के मुख्य स्तंभ रहे हमारे सुश्रावक कैलाशजी संकलेचा को श्रद्धांजलि।

जिनशासन की आज अपूरणीय क्षति हुई है।

–अशोक पारख बीकानेर

कैलाशजी की विदाई परिवार के लिए अपूर्ण क्षति है। मोहनीयता के कारण हम रिश्तों में बंधे हैं लेकिन ईश्वर के शब्द कोष में मोह नाम का शब्द है ही नहीं। दिवंगत आत्मा का निश्चित उत्कृष्ट स्थान के लिए प्रस्थान हुआ है।

–सुरेन्द्र जैन, गुड मॉर्निंग इंडिया, जयपुर

श्री कैलाश संकलेचा समर्पित व्यक्तित्व थे। पूरे जीवन पर्यन्त जैन समाज की सहृदयता से अनमोल सेवा की है। मेरे प्रिय मित्र राजकुमार संकलेचा के अनुज श्री कैलाश ने अनेक व्यक्तियों का मार्गदर्शन किया है।

–अशोक खतंग, चैन्नई

## विशिष्ट दिन

दि. 11.11.2019 चातुर्मासिक प्रतिक्रमण
दि. 12.11.2019 कार्तिक पूर्णिमा
दि. 15.11.2019 दादा श्री जिनकुशलसूरि पुण्यतिथि
दि. 19.11.2019 आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरि पुण्यतिथि
दि. 22.11.2019 प्रभु महावीर दीक्षा कल्याणक
दि. 25.11.2019 पाक्षिक प्रतिक्रमण
दि. 7.12.2019 मौन एकादशी

धारावाहिक कथा 10

# अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवरानी अपनी नियति पर जितना ज्यादा सोचती, उतना ही उसका तनाव बढता जा रहा था। अपने दुर्भाग्य पर विचार करते-करते उसकी आँखें भर आयी। एक सामंत पुत्री को जब स्वतंत्र राजा की पुत्रवधु बनने की सूचना मिली थी तो उसका हृदय कितना प्रसन्न हुआ था। उसकी सखियाँ उसके सौभाग्य से ईर्ष्या कर रही थी। माता-पिता ने आनंदित होकर इतना श्रेष्ठ दामाद पाने के उपलक्ष्य में कितने देवी-देवताओं को प्रसाद-चढ़ाया था पर आज...। जब उसने जाना कि उसके प्रियतम चौरी जैसे कुल-कलंकी व्यसन में आकण्ठ डूबे हुए हैं तो उसके पाँवों से जैसे धरती ही खिसक गयी।

उसे पता ही नहीं चला कि पीडा कब आँसू बनकर उसकी आँखों से बहना प्रारंभ हुई है और उसे रोता देखकर महारानी ने कब उसे अपने अंक में समेट लिया है। महारानी अत्यन्त वात्सल्य से होले-होले उसके माथे को सहलाने लगी।

बेटा! अपने कक्ष में मुझे पाकर तुम्हें अचरज हो रहा होगा। पर मैं जानती थी कि मेरे शब्दों का बोझ उठाने में तुम्हें मेरी जरूरत है इसलिए मैं तुम्हारे पीछे-पीछे ही यहाँ आ गयी।

आँसू के बहाने अपनी सारी कमजोरी बाहर निकाल देना बेटी। तुम्हें स्वयं को मजबूत बनाकर स्थिति को अपने पक्ष में मोडना है। यह पूरा राजघराना तुम्हारी ओर अत्यन्त आशाभरी निगाहों से ताक रहा है। तुम्हारे पास में गुणों का खजाना है, साथ ही सौंदर्य की सुगंध है। नारी ने सदैव पथ-भ्रष्ट पुरुषों को सन्मार्ग की राह दिखायी है। महाराजा ने भी विशेष रूप से युवराज को सही राह पर लाने हेतु तुम्हें आशीर्वाद प्रेषित किया है बेटा!

उठो बेटा! तुम क्षत्रियाणी हो। क्षात्र तेज जगाओ। साहस से बडी-बड़ी समस्या भी घटिकाओं में सुलझ जाती है। और चिन्ताओं से छोटी सी समस्या भी विराट् रूप ले लेती है। सखी तुल्य तुम्हारी ननंद राजकुमारी सुंदरी तुम्हें पूरा सहयोग करेगी।

युवरानी का मस्तिष्क धीरे-धीरे चिंतामुक्त होने लगा। उसने स्वयं को नकारात्मक विचारों की धुंध से मुक्त करते हुए आशास्पद भविष्य की ओर झांका। उसने सोचा- माना कि युवराज कुसंग के कारण बिगड़ गये हैं। पर उनकी आत्मा में कहीं न कहीं संस्कारों की छाप है। अपने अपराध के प्रति उनमें ग्लानि है। मैंने इतने लम्बे सहवास में उनकी ओर से मेरे प्रति कभी किसी अन्याय का अनुभव नहीं किया है।

मैंने स्पष्ट रूप से आज तक उनका अपराध नहीं पकड़ा है। हाँ...। कभी-कभी मुझे उनके आचरण में शंका अवश्य हुई है परंतु अभी भी उनके भीतर संकोच का परदा है। यह संकोच का परदा जीवन बदलने में बहुत उपयोगी हो सकता है।

उसने महारानी से कहा- माँ आपका आशीर्वाद रहा तो जरूर मैं अपने लक्ष्य में कामयाब बनूंगी। मैं अपने समर्पण के अमृत से उनके जीवन का जहर अवश्य दूर करूंगी।

सासु मां का हृदय भविष्य की सुंदर कल्पना से प्रसन्न हो गया। वे आश्वस्त हो गयी कि बहु का पुरुषार्थ उनके पुत्र के जीवन बाग को अवश्य हरा भरा करेगा।

महारानी बहु को कहकर अपने कक्ष में जाने के लिए उठ खडी हुई। युवरानी ने महारानी सासु मां के चरण स्पर्श किये और उन्हें छोडने बाहर तक साथ आयी। तुम्हारा

कल्याण हो! युवरानी अपने कक्ष में लौट आयी।

अपने कक्ष में आकर उसने कुछ देर विश्राम करना चाहा ताकि शांत और संयत मस्तिष्क से वह युवराज के जीवन की विसंगतियों को दूर करने की योजना के बारे में सोच सके।

वह सोयी अवश्य परंतु निद्रा तो जैसे उसका दरवाजा ही भूल गयी। वह पलकें मूंदे सोचती रही- पुष्पचूल अगर व्यसन मुक्त हो जाता है तो मेरा जीवन मेरे लिए वरदान है अन्यथा यही जीवन मेरे लिए बोझरूप और अभिशाप बनते वक्त नहीं लगायेगा।

गृहस्थ जीवन में दाम्पत्य संबन्ध महत्वपूर्ण है। पति-पत्नी दोनों गाड़ी के पहिए है। दोनों संतुलित और मिलकर जीवन की गाड़ी खींचे तो समस्या नहीं हो सकती पर विपरीत दिशा में दोनों खींचने का पुरुषार्थ करे तो या तो ऊर्जा नष्ट होगी या गाड़ी क्षत-विक्षत होगी।

मैं एक ही प्रयास में युवराज को बदल नहीं सकती और न एक ही झटके में आचार शैली बदल सकती हूँ। मुझे धीरे-धीरे उन्हें बदलना होगा।

रात धीरे-धीरे उतर रही थी। चारों ओर फैला हुआ अंधेरा प्रत्येक सभ्य व्यक्ति को घर की ओर प्रस्थान की प्रेरणा दे रहा था। ऐसे समय में मात्र आसुरी शक्तियाँ ही अपने भीतर का आसुरी तत्त्व प्रकट करने के लिए बाहर की ओर उन्मुख थी।

युवरानी ने गवाक्ष से दूर सुदूर में फैले अनंत आकाश की ओर निहारा। तारों भरा आसमान अत्यंत मोहक लग रहा था। चन्द्रमा से नितरती हुई चांदनी संसार को जितनी ठण्डक दे रही थी, युवरानी को उतनी ही आज व्याकुल कर रही थी।

आज दिन में युवरानी ने युवराज से खुलकर चर्चा करने का ठान लिया था। वह पर्यंक पर युवराज का इंतजार कर रही थी। पहला प्रहर बीता... युवराज के आगमन के कोई संकेत नहीं दिखे। दूसरा प्रहर भी लगभग समाप्त होने वाला था। और अचानक उसे पदचाप सुनाई दी। वह चुपचाप चद्दर में मुँह छिपाकर सोने का नाटक करने लगी। युवराज अत्यन्त धीमे-धीमे डग भरते हुए अन्दर आये। उन्होंने युवरानी को गहरी नींद में देखा तो आश्वस्त होते हुए कपड़े बदलकर सोने की तैयारी करने लगे। वे पर्यंक पर बैठने ही जा रहे थे और अचानक चद्दर उछालते हुए युवरानी उठ बैठी।

पुष्पचूल यह देखकर हड़बड़ा गया। वह सोचने लगा- यह क्या? देवी अभी तो गहरी नींद में थी और...

(क्रमशः)

# वर्धमान तप ओली का पारणा

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. ने पूज्य गुरुदेवश्री की सूरिमंत्र पीठिका साधना के उपलक्ष्य में श्री वर्धमान तप की 28वीं ओली की तपस्या की।

तपस्या का पारणा पूज्यश्री की पीठिका तपस्या के पारणे के साथ संपन्न हुआ। सभी मुनियों ने पारणा कराते हुए तपस्या की अनुमोदना की।

इसी प्रकार पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी आज्ञांजनाश्रीजी म. ने वर्धमान तप की 22वीं ओली की तपस्या की। इस अवसर पर पूज्यश्री ने तपस्वियों की शाता पूछते हुए तप की अनुमोदना की।

स्मृति शेष

# 'जीवन जीत गये'

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

प्रवचन समाप्त करके मैं नीचे हॉल में आकर अपने आसन पर बैठी थी। अन्य श्रावक-श्राविकाओं के साथ श्यामाजी ललवानी भी मेरे सामने थे और अचानक उनके पुत्र ने संदेश दिया कि आप जल्दी घर चलो, नानाजी अनशन स्वीकार कर रहे हैं।

मैंने पूछा- क्या तबीयत ठीक नहीं है? श्यामाजी ने बताया कि उम्र पूरी है। बाकी किसी प्रकार की कोई व्याधि नहीं है। कब से वे कह रहे हैं, अब यह शरीर उपयोगी नहीं है। अब इससे किसी भी प्रकार की आराधना संभव नही है अत: श्रावक का अंतिम मनोरथ पंडित मरण रूप मुझे अनशन करके अपने देह का त्याग करना है।

श्रावक अपने जीवन में तीन प्रकार के मनोरथ करता है। उसकी झंखना होती है कि परिग्रह का अल्पीकरण हो, संयम की प्राप्ति और अनशन पूर्वक मृत्यु मिले।

जिस मौत की कल्पना से बड़े-बड़े पराक्रमी भी घबराते हैं, उस मौत को मैं निमंत्रण देना चाहता हूँ। मुझे अब अनशन करना ही है, पर पुत्र और अन्य सारे परिजन उनकी बात अनसुना कर देते कि सम्पूर्ण स्वस्थ शारीरिक स्थिति में अनशन की कल्पना भी नहीं हो सकती। अभी और रुकें।

पर आज तो सुबह से ही उन्होंने तय कर लिया कि अब अनशन करना ही है। उन्होंने नाराजगी भरे स्वरों में उपालंभ देते हुए कहा- अगर अनशन की अनुमति अभी नहीं दोगे तो क्या मरने के बाद दोगे।

आखिर परिजन कैसे राजी हो सकते हैं? नित्य क्रियाओं में कहीं हल्का सा भी परिवर्तन नहीं था। मृत्यु की कहीं हल्की सी आहट भी नहीं थी तो फिर अनशन जैसा भीषण कदम कैसे उठाने देते?

परंतु आज तो जैसे उन्होंने वज्रसंकल्प ही कर लिया था। उन्होंने अपने पुत्र हितेन्द्र से कहा- कपडे बदलवाओ। कपड़े बदलवाये गये। तब तक आगंतुकों द्वारा समाचार चारों ओर प्रसारित हो गये कि रिखबचंदजी चोपड़ा अनशन कर रहे हैं।

उनकी पुत्रवधु इन्द्रादेवी ने आकर निवेदन किया- सूंठ का दूध तैयार है आप यह ग्रहण करें। तत्काल उन्होंने कहा- चलो, लाओ। तुम्हारे हाथ से अंतिम आहार के रूप में सेवन करके आजीवन आहार का त्याग करुंगा।

आखिर परिजनों की अश्रुपूर्ण अनुमति से संघ एवं गुरुभगवंतों की साक्षी से उन्हें तिविहार संथारा करवा दिया गया।

उस दिन तो मैं उनके घर नहीं जा पाई परंतु दूसरे दिन दोपहर गोचरी की क्रिया से निवृत होकर मैं नाकोड़ा नगर स्थित उनके आवास पर पहुँची।

उन्हें देखते ही पल भर के लिए मैं भावुक हो गयी। कैसा विशिष्ट पराक्रम प्रकट किया है?कितना भव्य उल्लास जगा है! बडी से बडी तपश्चर्या फिर भी आसानी से हो सकती है परंतु अनशन जैसा बड़ा कदम उठाना तो महान् पराक्रम का प्रतीक है। तपश्चर्या का समापन है पर अनशन का समापन नहीं है। वह तो मृत्यु पर्यन्त चलता है।

उन्होंने मुझे देखते ही अंजलिबद्ध होकर वंदन किया। मैं उनके चेहरे का स्मित और संकल्प के साथ समत्व की साधना का तेज देखकर अनुमोदना से भर उठी। मैंने पूछा-

आप कैसा महसूस कर रहे हैं? उन्होंने प्रत्युत्तर अवश्य दिया पर चूंकि उनकी आवाज मेरी समझ में नहीं आ रही थी। अत: उनके पुत्र ने कहा- कह रहे हैं, बहुत अच्छा लग रहा है। हृदय में अपार समाधि है। भावों में उल्लास है। मेरे भावों में और अधिक भावों की श्रेणी चढे, आप ऐसा कुछ सुनाओ।

मैं वहां लगभग एक घण्टा रुकी। पूरा समय वे तन्मयता से मुझे सुनते रहे। मैंने पद्मावती आलोचना सुनाई। उन्होंने संपूर्ण स्वस्थता से उसे सुना। जहाँ-जहाँ मिच्छामि दुक्कडं आया उन्होंने दिया। आत्मसिद्धि भी उन्होंने भाव पूर्वक सुनी।

जब मैं उठने लगी तो उन्होंने संकेत से कुछ और रुककर सुनाने का निवेदन किया। मैं तुरंत रुक गयी और महापुरुषों की महिमा एक भजन द्वारा सुनायी।

मुझे वहाँ रुकने और सुनाने में अत्यन्त अहोभाव की अनुभूति हो रही थी। उनकी जागरुकता मेरे भावों में निरंतर गहरा आनंद पैदा कर रही थी।

उन्हें देखकर मैं स्वयं के लिए भी ऐसा ही समाधिमरण प्राप्त करने की प्रार्थना सतत कर रही थी।

इस संसार में सबसे बड़ा दु:ख ही मृत्यु का माना गया है। व्यक्ति संसार बसाने में जितना अधिक आनंद का अनुभव करता है, बिखरने की कल्पना उतना ही उसे दर्द देती है।

मैं उन्हें देखकर उनकी भीषण प्रतिज्ञा से स्वयं के भावों की तुलना करती कि क्या अनिश्चित समय के लिए मैं मिली हुई व्यवस्था से दूर हो सकती हूँ? मैं जितना-जितना सोचती उतना ही उनके प्रति भाव विभोर हो जाती।

बार-बार उनकी मानसिकता के संबंध में विचार करती- इनके अन्त:करण में क्या किसी भी समय बैचेनी नहीं होती होगी? क्या इन्हें यह विचार नहीं आता होगा कि कब तक मुझे निराहार रहना होगा? क्या ये जीवन मुक्ति के लिए भीतर ही भीतर प्रार्थना नहीं कर रहे होंगे।

मैं उनकी मनोदशा पढ़ने और जानने की जिज्ञासा से टकटकी लगाये निरंतर उन्हें देखती रही पर उनकी शांत और समाधिस्थ मुस्कान लगातार मुझे आश्वस्त कर रही थी कि उनके भावों में अपनी आत्मा पर लगे कर्म मैल दूर होने की मात्र प्रसन्नता है।

परिवार ही नहीं संघ और समाज भी सतत उनके इर्दगिर्द खड़ा था। प्रतिपल स्वाध्याय, स्मरण एवं नवकार महामंत्र की धुन चल रही थी। अखंड साधना का निर्दोष और निर्मल वातावरण साधक को ऊर्जा दे रहा था। श्री रिखबचंदजी अपने अन्त:करण को निर्मल कर रहे थे।

जब मैंने मंगलपाठ सुनाकर प्रस्थान किया तो उनका निवेदन रहा कि मैं प्रतिदिन उन्हें सत्संग का लाभ दूं। परंतु वर्षा का मौसम होने से दूसरे दिन तो नहीं पर, तीसरे दिन जरूर गयी। उनके चेहरे पर वही सौम्य मुस्कान। शरीर में कमजोरी बढ़ गयी थी पर आत्मा का तेज बढ गया था।

आज भी मैं घण्टा भर बैठी। काफी लम्बा सत्संग चला। उठने से पूर्व मैंने कहा- आप पूर्व परम्परा से खरतरगच्छीय श्रावक है। मुझे इस बात की सुखद अनुभूति है कि आप हम एक परम्परा से हैं। आपके पूर्वजों द्वारा आपके मूल क्षेत्र कनाना (सिवांची) में मंदिर के शिखर पर कलश चढ़ाया गया है। आप अपनी कल्पना में शिखर में विराजमान प्रभु के दर्शन करें। आपको प्रभु दर्शन की कल्पना प्रभु का शासन प्रदान करेगा। प्रभु का साक्षात् दर्शन लाभ होगा।

बाद में वर्षा के प्रकोप से मेरा लगभग 10 दिन तक जाना नहीं हुआ। नहीं जा पाने की पीडा थी पर रास्ते सारे कीचड़ से भर गये थे। अत: जाना संभव न था। वर्षा का प्रवाह भी सतत जारी था। अनशन के 11 दिन बाद उन्होंने पानी का भी त्याग कर दिया था। मैं उनके बारे में सतत पृच्छा करती।

उनके अनशन का 15वां दिवस था। मौसम सामान्य था। रास्ते भी खुल गये थे। मैं प्रवचन के तुरंत पश्चात् उनके आवास की ओर चल पड़ी। मैं, साध्वी प्रज्ञांजनाश्री एवं मुमुक्षु नर्मदा जैन के अतिरिक्त रमेश लुंकड, मंथन लुंकड, मगराजजी भंसाली, धर्मेन्द्रजी कांकरिया आदि उनके आवास पर पंहुचे। वे अत्यन्त कृशकाय हो गये थे। पेट और पीठ एक हो गये थे। फेफडे दिख रहे थे। सांस तीव्र गति से चल रही

थी। मैं उन्हें देखकर कांप गयी। आज वे अर्धजागृत स्थिति में थे। उन्हें मेरे आने की सूचना दी।

उन्होंने सप्रयास आँखे खोली। मैं उनकी शारीरिक स्थिति को देखकर अनुमान लगा रही थी कि अब पंछी पिंजरा खाली करने की तैयारी में है। मैं बैठ गयी। मैंने पूछा- कैसे है? उन्होंने संकेत से कहा- बहुत अच्छा। उन्होंने अंजलि बनाने की चेष्टा की पर आज शक्ति नहीं थी। मैंने उन्हें पद्मावती आलोचना कुछ भजन आदि सुनाये।

आज उठने का मन नहीं हो रहा था। फिर भी उठना तो था ही। मैंने उन्हें मंगल पाठ सुनाया और जाने के लिए तत्पर हुई, इतने में मुझे कहा- कल्याण मंदिर सुनाओ।

कल्याण मंदिर स्तोत्र मेरी श्रद्धा का परम पावन स्तोत्र है। मैं पुनः रुक गयी। मैंने उन्हें कल्याण मंदिर स्तोत्र का इतिहास बताते हुए कहा- इसी स्तोत्र की स्तुति से परमात्मा अवंति पार्श्वनाथ प्रकट हुए हैं। यह स्तोत्र चमत्कारी और समस्त इष्ट प्राप्ति का माध्यम है।

उन्होंने तन्मयता से प्रभु पार्श्वनाथ की वह स्तुति सुनी। पता नहीं उस दिन मेरे लौटने का भाव ही नहीं हो रहा था पर मुझे समय की सुई को भी समझना पड़ा और अनिच्छा पूर्वक भी उन्हें बोधामृत के कुछ वाक्यों का पाथेय देकर मैं वहाँ से विदा हुई।

मैं सीढियाँ उतर रही थी और स्थानकवासी संत सीढी चढ रहे थे। अनायास ही वहाँ चतुर्विध संघ एकत्र हुआ। मेरा मन कुछ... कुछ संकेत दे रहा था। कल्याण मंदिर स्तोत्र सुनाने का निवेदन... चतुर्विध संघ का अनायास संगम... जरूर घटना की आहट है।

मैं वहाँ से अपने आवास पर पहुँची, बीच में दीपचंदजी तलेसरा नाकोडा विद्यालय के निवेदन पर मैं वहाँ गयी। मुझे वहाँ 15 से 20 मिनिट का समय लगा। मैं आवास पर पहुंची ही थी और एक श्राविका ने आकर कहा- महाराजजी! आपके प्रस्थान के कुछ समय बाद ही उनका अनशन सीझ (परिणाम को प्राप्त होना) गया। सुनकर मेरी आंखों के किनारे भीग गये।

मेरे होठों से शब्द स्वतः निकल पड़े- उन्होंने मानव जीवन को सार्थक कर दिया।

# रमेश-महेशौ हसावः

एकदा महेशः तस्य मित्रस्य रमेशस्य गृहं गतवान्। पिपासितेन तेन पृष्टं, जलं कुत्रास्ति?

रमेशः- (परिहासं कुर्वन्) घटे!

महेशः- घटः कुत्रास्ति?

पाकशालायाम्।

पाकशाला कुत्रास्ति?

गृहे।

गृहं कुत्रास्ति?

ग्रामे।

ग्रामः कुत्रास्ति?

तालुकायाम्। (हिन्द्यां तहसील्इति)

तालुका कुत्रास्ति?

जिलायाम्।

जिला कुत्रास्ति?

राज्ये।

राज्यं कुत्रास्ति?

भारतदेशे।

भारतदेशः कुत्रास्ति?

एशियाखण्डे।

एशियाखण्डः कुत्रास्ति?

पृथिव्याम्।

पृथिवीः कुत्रास्ति।

जले।

जलं कुत्रास्ति?

घटे।

अरे! केवलम् एकचषकपरिमितस्य जलस्य कृते त्वया सम्पूर्णं पृथिव्याः परिभ्रमणं कारितम्! हास्यमिश्रितेन क्रोधेन महेशेनोक्तम्।

# श्रद्धा फलीभूत बनी

मुनि समयप्रभसागरजी म.

मरुधर प्रदेश के एक छोटे शहर के बाहरी क्षेत्र में शहर से लगभग एक कोस दूर कृषि उपज मण्डी थी। जहाँ बाजार लगता था और स्थायी दुकानें भी थी। आस-पास के गाँवों के किसान अपने खेतों में उपजी फसल बेचने आते थे। व्यापारी लोग ज्यादा मात्रा में अनाज संग्रहित होने पर दूसरे क्षेत्रों में बेचने के लिये भेजते और वहाँ से दूसरी सामग्री लाकर यहाँ बेचते थे। चातुर्मास के बाद मण्डी में लोगों का आवागमन भी बढ़ जाता था।

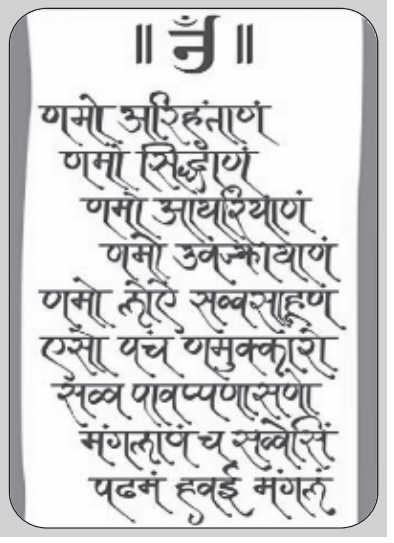


इस मण्डी में कुछ जैन श्रावकों की भी दुकानें थी, जिनमें कुछ व्रतधारी श्रावक भी थे। वे अपने नियमों का सजगता से पालन करते थे। घर पर बार-बार आना जाना न पड़े, समय भी बच जाए और रात्रि भोजन न करना पड़े, इसलिये घर से टिफिन (भाता) साथ ही लाते थे। मिल बैठकर प्रेम पूर्वक एक-दूसरे को मनुहार पूर्वक खिलाकर साधर्मिक भक्ति का लाभ भी प्राप्त करते थे। परस्पर एकता और भाईचारे का वातावरण उन्हें प्रसन्नता से सदा भरे रखता था। इस रास्ते से गुजरते हुए साधु-साध्वी जी महाराज को रुकने की विनती करते थे। इस क्षेत्र में विचरण बहुत कम ही होता था।

यह घटना उस समय की है, जब मरु प्रदेश में खेती पूरी तरह से वर्षा पर आधारित थी। भूजल भी बहुत गहराई से प्राप्त होता था। खेती पारम्परिक साधनों से होती थी। खेतों में हल चलाने के लिये मुख्य रूप से बैल, ऊँट, भैंसा और गधा काम में लिया जाता था। जैविक खाद का ही उपयोग होता था। वे परम्परागत घरों में संचित बीज उपयोग में लेते थे। वर्षा अच्छी हो गई तो पैदावार अच्छी हो जाती थी। कम होने पर फसल बराबर नहीं हो पाती थी। कभी-कभी तो बीज और जुताई का खर्च भी निकालना मुश्किल हो जाता था। अकाल की स्थिति में मानव से ज्यादा मवेशियों की हालत खराब हो जाती थी। चारे-पानी की व्यवस्था बहुत मुश्किल से हो पाती थी।

इस कृषि उपज मण्डी से एक कोस की दूरी पर भीमा नामक किसान का अपने खेत में ही घर था। उसके पास 60 बीघा जमीन थी। भीमा किसान मेहनती था। सरल स्वभाव का था। उसकी पत्नी भी उसके अनुरूप थी। सदा सभी कार्यों में सहयोग करती थी। भीमा के पास दूधारू पशु भी थे और दो बैल भी थे, जो खेत में हल जोतने में काम आते और बाकी समय बैलगाड़ी खींचने में काम आते थे। भीमा बैलगाडी द्वारा अपने घर से मण्डी आता था। मण्डी में अनाज लाने-ले जाने में बैलगाडी का उपयोग करके... मजदूरी करके अपना जीवन निर्वाह करता था। भीमा के एक ही लड़का था। जो स्वभाव से उद्दण्ड था, शैतानियाँ करता और लोग उससे परेशान होकर शिकायतें करने आते थे। भीमा ने अपने लड़के को बहुत बार समझाया मगर वह भीमा की बात सुनी अनसुनी करता था। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे उसकी हरकतें भीमा की परेशानी बढ़ा रही थी।

एक बार मुनि भगवंतों के इस क्षेत्र में आने के समाचार श्रावकों को मिले। श्रावकों ने मिलकर परस्पर विचार-विमर्श

कर मुनि भगवन्तों को विनती करने के लिये जाना तय किया। मुनि भगवन्त पधारेंगे... हमें जिनवाणी रूपी अमृत का पान करायेंगे। इस बार मुनि भगवन्तों को मण्डी परिसर में रुकवाने का विचार यह सोचकर किया कि हमारे साथ-साथ इन किसानों और मजदूरों को भी प्रवचन सुनने को मिलेगा। भव्यात्माओं को भी सन्मार्ग मिलेगा। पाप से निवृत्त होंगे और धर्म में प्रवृत्त होंगे। इसमें भी हमें निमित्त बनने का सौभाग्य मिलेगा। परिवार वालों को यहाँ बुला लेंगे तो वे भी यहाँ निर्विघ्न रूप से जिनवाणी सुन सकेंगे।

मुनि भगवन्त श्रावकों की विनती स्वीकार कर पधारे। धर्म की प्रभावना का अच्छा अवसर देखा। वहाँ निर्दोष वसति भी मिल गई और निर्दोष आहार भी! क्योंकि श्रावक और किसान हमेशा वहाँ ही भोजन करते थे। साधु जीवन के अनुकूल वातावरण देख कर उन्होंने कुछ दिनों के लिये वहाँ स्थिरता कर ली। प्रवचन में स्थानीय लोगों के साथ-साथ बाहर के किसान-मजदूर लोग उत्साह से सम्मिलित होकर धर्म श्रवण करने लगे। प्रवचन के बाद भी किसान और मजदूर लोग साधु भगवन्तों के सानिध्य में अपनी समस्याएं बताकर उनका निदान करने के उपाय प्राप्त कर रहे थे तो कुछ लोग धर्म को समझने के लिये जिज्ञासा के साथ प्रश्न पूछते व सन्तोषजनक उत्तर पाकर आनन्दित होते थे।

भीमा किसान ने अपनी परेशानी मुनि भगवन्त के समक्ष व्यथा के साथ बताई। भगवन्! इस परेशानी के कारण मेरे सम्मान को ठेस पहुंचती है। लोग शिकायतें लेकर आते हैं। लोगों का नुकसान देखकर भी मुझे बहुत दु:ख होता है। पुत्र की करतूत के कारण शर्मिन्दा होना पड़ता है। इकलौती संतान न सुधरी तो मेरा भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा, आप कुछ उपाय बताए। संतान सुधर जाय जिससे मुझे और मेरी पत्नी को भी सुकून मिल जाए। करुणा सिन्धु मुनि भगवन्त भीमा की पीड़ा सुनकर द्रवित हुए बिना न रह सके और उन्होंने निस्वार्थ भाव से भीमा के इस वर्तमान सुख के साथ-साथ दूसरे जीव भी सुखी बने, इस शुभ भाव से उसे नवकार महामंत्र सिखाया और उसका श्रद्धा के साथ सबके हित के लिये जाप करने को कहा। साथ ही अपनी संपत्ति और साधनों को जीवदया में लगाने की प्रेरणा दी। जीवदया करने से होने वाले फायदों को बताया।

भीमा ने दोनों ही बातों को स्वीकार कर वहाँ से विदा ली। घर आया और अपनी पत्नी को सारी बात बताई। दोनों ने उसी समय से श्रद्धा पूर्वक नवकार महामंत्र का जाप शुरु कर दिया। कुछ ही दिनों में उसका सुप्रभाव उसकी संतान पर पड़ा और वह धीरे-धीरे शान्त स्वभावी होने लगा। शिकायतें आना बन्द हो गई। यह प्रत्यक्ष प्रभाव देखकर उन्होंने दूसरे उपाय पर भी अमल शुरू कर दिया।

जीवदया के लिये उसने लावारिस, असहाय, बीमार, रुग्ण और वृद्ध पशुओं को अपनी बैलगाड़ी पर लादकर अपने घर लाने लगा। अपने ही खेत में रखता और अपने ही साधनों से उनकी सेवा शुश्रुषा करने लगा। उसकी पत्नी भी इस कार्य में सहयोग करती। इन दोनों की निष्काम सेवा वृत्ति और प्रकृति के खुले और शान्त वातावरण में अनुकूल आहार व उपचार से पशु ठीक होने लगे। उसने खेत का थोड़ा हिस्सा स्वयं के उपयोग के लिये रखकर बाकी का हिस्सा उन मूक प्राणियों के लिये तय कर लिया। खेत में ही दो दिशाओं में गड्ढे खोदकर तालाब का रूप दिया। वर्षा में पानी उन गड्ढ़ों में इकट्ठा होता। वह पानी वर्ष भर काम आता। तालाब के किनारे नए-नए वृक्षों को रोपा। पुरानों को व्यवस्थित किया। खेत में कुछ जगह पर सीमेन्ट से पानी के छोटे कुण्ड भी बनाए।

पूरे क्षेत्र में जानवर उन्मुक्त रूप से विचरण करने लगे। धीरे-धीरे जानवरों की संख्या जैसे जैसे बढ़ने लगी, वैसे-वैसे उसके सौभाग्य में वृद्धि होने लगी। साधन भी स्वत: बढने लगे। फसल भी अच्छी होने लगी। आस-पास के लोग भी स्वेच्छा से सेवा करने के लिये आने लगे। भीमा का लड़का भी इतने समय में पूर्ण रूप से बदल गया। वो भी इन मूक प्राणियों की सेवा में पूर्ण रूप से समर्पित हो गया।

गौशाला में गायों के अलावा दूसरे प्राणी भी रहने लगे। सबकी सेवा निस्वार्थ भाव से होने लगी। वहाँ पर दो अलग-अलग दिशाओं में कुएं खुदवाए गए जहाँ से मीठा पानी निकाला। मीठे पानी से फसलें भी अच्छी मात्रा में होने लगी। पशुओं के चारे-पानी की व्यवस्था वर्ष भर निर्बाध रूप से चलने लगी।

इतने वर्षों की भीमा की मेहनत रंग लाई। जीवन में सेवा कार्य और महामंत्र जाप का प्रत्यक्ष परिणाम मिलने लगा। उसका जीवन समाधिमय और सुखमय होने लगा। भीमा के जाप का क्रम भी नियमित चलता रहा। वृद्धावस्था में भी स्वस्थ जीवन व पूरी तरह से स्वावलम्बी था। पशुओं के बीच रहकर उनके मूक प्रेम को स्वीकार करके उसका हृदय आनन्दित होता था। उसका पुत्र भी पूरी तरह से परोपकार के कार्यों में अपने आपको जोड़ चुका था। भीमा अपने उपकारी मुनि भगवंतों का सदैव स्मरण करता और कहता कि सत्संग की एक घड़ी भी जीवन को परम सौभाग्यशाली बना देती है। श्रद्धा से किया गया सत्संग आत्म कल्याण का कारण बने तो इसमें कोई शंका नहीं है।

वह सबको सत्संग की प्रेरणा करता। जीव दया के लाभ बताता और नवकार महामंत्र सबको सुनाता। नवकार महामंत्र की महिमा का प्रत्यक्ष फल बताते हुए अपने पुत्र के जीवन परिवर्तन का वर्णन करता।

भीमा पूरे गाँव का आदर्श बन गया और उसके द्वारा स्थापित जीवों का उन्मुक्त अभयारण्य सबके लिये प्रेरणा स्रोत बन गया।

## अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर

# खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा

## (2019–2022) के चुने गये पदाधिकारी

अध्यक्ष- श्री मोहनचंदजी ढड्ढा, चेन्नई

वरिष्ठ उपाध्यक्ष- श्री प्रकाशचंदजी सुराणा, रायपुर

महामंत्री- श्री पदमकुमारजी टाटिया, चेन्नई

सहमंत्री- संघवी श्री हंसराजजी डोसी, बैंगलोर

कोषाध्यक्ष- श्री रतनलालजी बोहरा हाला वाले, अहमदाबाद

सह कोषाध्यक्ष- संघवी श्री बाबुलालजी मरडिया, मुंबई

सांस्कृतिक मंत्री- श्री सुनीलकुमारजी लोढा, टोंक

**क्षेत्रीय उपाध्यक्ष-**

छत्तीसगढ- श्री संतोषकुमारजी गोलेच्छा, रायपुर

महाराष्ट्र- श्री प्रकाशजी कानूगो, मुंबई

कर्णाटक- संघवी श्री कुशलराजजी गुलेच्छा, बैंगलोर

गुजरात- संघवी श्री अशोककुमारजी भंसाली, अहमदाबाद

पूर्वी राजस्थान- श्री अनूपजी पारख, जयपुर

पश्चिमी राजस्थान- श्री रतनलालजी संखलेचा, बाडमेर

मध्य प्रदेश- श्री विनोदजी डागा, बेतुल

पश्चिम बंगाल- श्री विजयमलजी लोढा, कोलकाता

तेलंगाना/आंध्रप्रदेश- श्री मोतीलालजी ललवानी, हैदराबाद

दिल्ली/उत्तर प्रदेश- श्री संपतराजजी बोथरा, दिल्ली

# एक विशिष्ट पत्र



पूज्य गुरुदेवश्री के संग्रह में पुराने पत्र प्राप्त हुए हैं। उनमें से एक पत्र का प्रकाशन यहाँ कर रहे हैं। यह पत्र पूज्य आगम प्रभाकर मुनि श्री पुण्यविजयजी म. जिन्होंने जैसलमेर ज्ञानभंडार का विशद कार्य किया था तथा कई प्राचीन ग्रन्थों का संपादन कर प्रकाशन किया था, ने पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजीम .सा.क ो लखाथ ा।इ स पत्र से ज्ञात होता है कि पूज्य आचार्यश्री व उनमें कितना प्रेम व सौहार्द भाव था। पत्र की भाषा से ज्ञात होता है कि दोनों पूज्यश्री परस्पर निरन्तर संपर्क में रहते थे तथा ज्ञान-भक्ति में परस्पर सहयोगी थे।

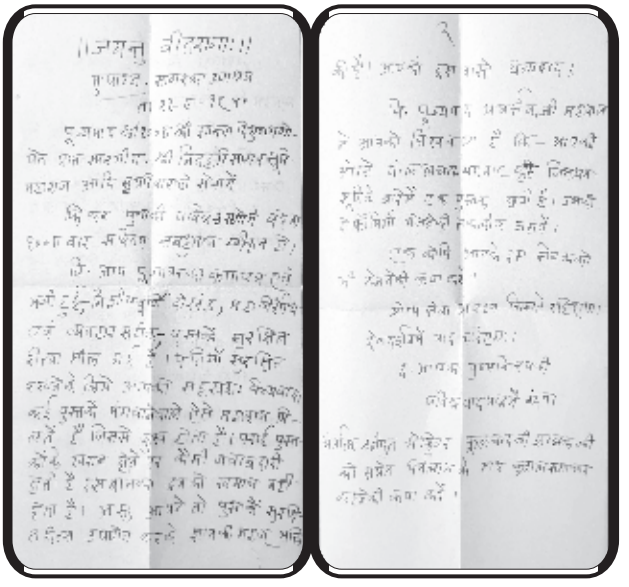

पत्र अविकल रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है-

।। जयन्तु वीतरागा:।।

मु. पाटन. सागर का उपाश्रय

ता. 21-8-1940

पूज्यपाद श्री 1008 श्री शान्त्यादिगुणगणोपेत प्रात: स्मरणीय श्री जिनहरिसागरसूरि महाराज आदि सपरिवार की सेवा में

किंकर पुण्य की पवित्र चरणों में वंदना 1008 वार सविनय सबहुमान स्वीकृत हो।

वि. आप पूज्यवर का कृपा पत्र एवं भेजी हुई,- निशीथ चूर्णि दो खंड, महानिशीथ एवं व्यवहार सटीक पुस्तकें सुरक्षित रीत्या मील गई हैं। प्रतियाँ सुरक्षित रखने के लिये आपको सहस्रश: धन्यवाद!

कई पुस्तकें मंगवाने वाले ऐसे महाशय मिलते हैं जिससे दु:ख होता है। पराई पुस्तकों के खराब होने पर कैसी जवाबदारी होती है, इस बात का इनको ख्याल नहीं होता है। अस्तु आपने तो पुस्तकें सुरक्षितरीत्या उपयोग करके ज्ञान की महान् भक्ति की है। आपका इस वास्ते धन्यवाद।

वि. पूज्यपाद प्रवर्त्तकजी महाराज ने आपको लिखवाया है कि आपकी ओर से पं. लालचंद भगवान् कृत जिनप्रभसूरि के बारे में एक पुस्तक छपी है। उसकी दो कॉपियाँ भेजने की तकलीफ उठावें।

एक कोपि आपके इस सेवक को भी भेजने की कृपा करें।

योग्य सेवा अवश्य लिखते रहिएगा। देवदर्शन में याद करिएगा।

द. आपका पुण्यविजय की पवित्र पादपद्म में वंदना।

धर्मात्मा श्रीयुत श्रेष्ठिवर फूलचंदजी झाबक जी को सप्रेम धर्मलाभ के साथ कुशल समाचार कहने की कृपा करें।

# सूरिमंत्र की चौथी व पांचवीं पीठिका संपन्न

धुले 20 अक्टुंबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य रत्न पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने सूरि मंत्र की चौथी एवं पांचवीं पीठिका की आराधना ता. 20 अक्टूबर को संपन्न की।

इस उपलक्ष्य में ता. 20 अक्टूबर को महामांगलिक का विशिष्ट आयोजन किया गया।

ता. 26 सितम्बर 2019 को पूज्यश्री ने चौथी मंत्र पीठिका में प्रवेश किया था। आठ दिवसीय चौथी पीठिका की पूर्णाहुति पर ता. 4 अक्टूबर को महापूजन का आयोजन किया गया। उसी दिन पूज्यश्री ने पांचवीं मंत्राधिराज पीठिका में प्रवेश किया। चौथी पीठिका में पूज्यश्री ने गणिपिट्टक यक्षराज की एवं पांचवीं पीठिका में गुरु गौतमस्वामी की आराधना संपन्न की। ता. 20 अक्टूबर को सूरिमंत्र महापूजन का विधान किया गया।

पीठिका की पूर्णाहुति पर सकल श्री संघ के साथ पूज्यश्री प्रवचन सभा में पधारे। मांगलिक श्रवण करने के लिये देश विदेश से हजारों भक्तों का आगमन हुआ।

इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने सभा का संचालन किया। उन्होंने पूज्यश्री के गुणों का वर्णन करते हुए अपनी अभिनंदनाऐं प्रस्तुत की। उन्होंने कहा- आचार्य भगवंत को शासन सेवा व प्रभावना के लिये विशेष साधना करनी होती है। गुरु का सानिध्य सभी को समान रूप से वैसे ही प्राप्त होता है, जैसे हर फूल को महकने का अवसर प्राप्त होता है।

पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म. ने कहा- मुझे गुरुदेव की सेवा का अवसर जो प्राप्त हो रहा है, यह परम सौभाग्य की बात है। आगे भी मुझे आपकी सेवा मिलती रहे, यही प्रार्थना करता हूँ। पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ने मराठी भाषा में वक्तव्य देते हुए कहा- मैं सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे गुरुदेव का सानिध्य प्राप्त हुआ। जैसे आग में तप कर सोना कुन्दन बनता है, वैसे ही गुरुदेव भी तप-जप की साधना में निखरते हैं। पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ने सूरि मंत्र साधना हेतु पूज्यश्री को वर्धापना अर्पण की। उन्होंने कहा- गुरुदेव जैसे शास्त्रों में पारगामी हैं, वैसे ही भक्ति भावों में भी उतने ही प्रवीण हैं। आपश्री के गुणों का क्या वर्णन करूँ, आपका हम अभिनंदन करते हैं।

इस अवसर पर संघवी विजयराजजी डोसी बैंगलोर, दिलीपजी गांधी जलगांव, रमेशजी बोथरा चेन्नई, सुश्री नेहा नाहर धूलिया, पदमजी बरडिया दुर्ग, जगद्गुरु मंडल धूलिया, सुरेश लूणिया, श्रुति कांकरिया, कीर्ति गोलेच्छा, भाग्येशकुमार आदि ने अपने भाव अभिव्यक्त किये। धूलिया संघ के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर ने सभी का स्वागत किया एवं पूज्यश्री की साधना के प्रति अहोभाव अभिव्यक्त किया।

मुंबई बाडमेर निवासी श्री भंवरलालजी विरधीचंदजी छाजेड ने गुरुपूजन का लाभ प्राप्त किया। पूज्यश्री ने महामांगलिक के पश्चात् सूरिमंत्र साधना का विवेचन किया।

महामांगलिक के अवसर पर जलगांव, कारोला, सांचोर, चितलवाना, मुंबई, सूरत, नवसारी, नंदुरबार, दोंडाइचा, शहादा, खेतिया, तलोदा, अक्कलकुआं, खापर, सेलंबा, अमलनेर, धरणगांव, चोपडा, इन्दौर, उज्जैन, मालेगांव, नाशिक, बाडमेर, चोहटन, जैसलमेर, चेन्नई, बैंगलोर, अहमदाबाद, बडौदा, दुर्ग, रायपुर, धमतरी, भिवंडी, पाली, बालोतरा, हैदराबाद, ब्यावर, जयपुर, खिमेल, बिजयनगर, जसोल, बडवाह आदि कई शहरों से संघ व श्रद्धालु लोगों का बडी संख्या में पधारना हुआ।

बालोतरा से पधारे सुप्रसिद्ध संगीतकार अनिल सालेचा ने वातावरण को भक्ति मय बना दिया।

# कुमारी पायल बागरेचा की भागवती दीक्षा 7 फरवरी को

धुले 20 अक्टुंबर। बालोतरा निवासी श्री अशोककुमारजी सौ. मंजुदेवी बागरेचा की सुपुत्री कुमारी पायल बागरेचा की भागवती दीक्षा माघ शुक्ला 13, ता. 7 फरवरी 2020 को बालोतरा में संपन्न होगी।

बागरेचा परिवार महामांगलिक के अवसर पर ता. 20 अक्टूबर को पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से विनंती करने उपस्थित हुआ।

सकल श्री संघ की साक्षी से श्री अशोककुमारजी ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने की आज्ञा प्रदान की और पूज्यश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया।

मुमुक्षु पायल बागरेचा ने अपने हृदय के भाव अभिव्यक्त करते हुए कहा– मेरे परिवार जनों का यह अनंत उपकार है कि उन्होंने मुझे संयम की आज्ञा प्रदान की।

इस अवसर पर मुमुक्षु पायल के जीजाजी श्री मुकेशजी लूंकड ने भी अपने भाव अभिव्यक्त किये।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने मुमुक्षु पायल के दादाजी श्री धनराजजी बागरेचा की स्मृति करते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेवश्री जिनकांतिसागरसूरिजी म. के भक्तिवंत श्रावकों में उनका स्थान था। उसी परिवार का दीक्षा हेतु आग्रह अनुमोदनीय है।

बागरेचा परिवार की विनंती स्वीकार कर माघ शुक्ल 13, ता. 7 फरवरी 2020 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। मुमुक्षु पायल बागरेचा पूजनीया महत्तरा समुदायाध्यक्षा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या बनेगी।

# कारोला अंजनशलाका प्रतिष्ठा ता. 26 जनवरी 2020

धुले 20 अक्टुंबर। महामांगलिक के पावन अवसर पर धूलिया नगर में कारोला श्री संघ उपस्थित हुआ। श्री संघ ने पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. से प्रतिष्ठा कराने की तथा मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया।

पूज्यश्री ने उनकी विनंती स्वीकार कर माघ शुक्ल 2, ता. 26 जनवरी 2020 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया।

कारोला गाँव सांचोर के पास स्थित है। यहाँ नमिनाथ परमात्मा का मंदिर है। उसका आमूलचूल जीर्णोद्धार पूज्यश्री की पावन निश्रा में हुआ है। शुभ मुहूर्त्त प्राप्त कर श्री संघ में परम उल्लास व आनंद का वातावरण छा गया। जय जय कार की ध्वनि से मुहूर्त्त को बधाया।

# खींचन चौविस्था मंदिर एवं दादावाडी की वर्षगांठ

फलोदी 17 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा. हर्षप्रज्ञाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में फलोदी के समीप खींचन नगर में मिगसर वदि 5 रविवार ता. 17 नवम्बर 2019 को चौविस्था पार्श्वनाथ जिनमंदिर एवं दादावाडी की 19वीं वर्षगांठ निमित्त ध्वजा चढाई जायेगी। पूजनीया गणिनी महाराज आदि साध्वी मंडल का मंगल नगर प्रवेश होगा। तत्पश्चात् सतरह भेदी पूजा पढाई जायेगी। विधि विधान के साथ ध्वजा चढाई जायेगी।

# पुस्तक विमोचन

धुले 20 अक्टुंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में महामांगलिक आयोजन के दिन ता. 20 अक्टूबर 2019 को पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा लिखित तीन पुस्तकों का विमोचन किया गया।

अन्तर्यात्रा नामक पुस्तक के विमोचन का लाभ बाडमेर-मालेगांव निवासी श्री मांगीलालजी सौ. सुमित्रादेवी मालू परिवार ने लिया। दूसरी अन्तर्नाद नामक पुस्तक के विमोचन का लाभ धमतरी निवासी श्री नवरतनमलजी पन्नालालजी गोलेच्छा परिवार ने लिया। जबकि तीसरी पुस्तक खरतरगच्छ गौरव गाथा के विमोचन का लाभ जयपुर निवासी श्री सिरहमलजी ताराचंदजी संचेती परिवार के श्री राजेन्द्रजी संचेती ने लिया। यह ज्ञातव्य है कि संचेती परिवार श्री जिनहरि विहार धर्मशाला का भूमिदाता परिवार है।

# तेजपुर में धर्माराधना

तेजपुर 11 अक्टुंबर। जैन श्वेतांबर श्री संघ तेजपुर के तत्त्वावधान में पूज्य अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के सूरिमंत्र की चौथी एवं पांचवी पीठिका के उपलक्ष में पंचाह्निका महोत्सव ता. 13 अक्टुंबर तक एवं त्रिदिवसिय सरस्वती जाप साधना अनुष्ठान प्रातः 5.15 बजे से 7 बजे तक संपन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर पू. गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म., पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी समतामूर्ति प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियलताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की निश्रा रही।

## श्री जिनहरि विहार, पालीताना की मीटींग संपन्न
## श्री राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर ट्रस्टी बने

धुले 21 अक्टुंबर। श्री जिनहरिविहार समिति, पालीताना की बैठक पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री की निश्रा व समिति के अध्यक्ष संघवी श्री विजयराजजी डोसी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। महामंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया ने गत सभा की कार्यवाही पढी, जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। कोषाध्यक्ष श्री पुखराजजी तातेड ने वार्षिक लेखाजोखा प्रस्तुत किया। वहाँ चल रहे निर्माण कार्य की समीक्षा की गई। जयपुर निवासी श्री राजेन्द्रजी संचेती को ट्रस्टी के रूप में सम्मिलित किया गया। आवश्यक चर्चा विचारणा के उपरान्त बैठक का समापन किया गया।

## श्री जीरावला दादावाडी ट्रस्ट की मीटींग संपन्न

धुले 22 अक्टुंबर। श्री जीरावला तीर्थ में निर्माणाधीन दादावाडी की मीटींग पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में टस्ट के अध्यक्ष श्री प्रवीणजी संखलेचा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें सर्वप्रथम जीरावला मंदिर दादावाडी के संपूर्ण भूमिदाता श्री अरविन्दजी कालुचंदजी कसाजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार के भावों की अनुमोदना की गई।

बैठक में जिन मंदिर के मानचित्र पर विचार विमर्श किया गया। साथ ही धर्मशाला भोजनशाला आदि के निर्माण हेतु चर्चा विचारणा की गई।

# 40वीं ओली का पारणा

इचलकरंजी। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया आगम ज्योति प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के वर्धमान तप की 40वीं ओली का पारणा कार्तिक शुक्ल 3 को संपन्न हुआ।

इसके उपलक्ष्य में पूज्याश्री के श्री बाबुलालजी रमेशकुमारजी लूंकड के यहाँ श्रीसंघ सहित पगलिये हुए। लूंकड परिवार की ओर से प्रभावना दी गई।

इस अवसर पर पूज्याश्री ने फरमाया- तपस्या कर्म निर्जरा का मुख्य हेतु है। परमात्मा महावीर ने तप के द्वारा ही कर्मों की निर्जरा की थी।

केयुप के राष्ट्रीय महामंत्री रमेशकुमार लूंकड ने कहा- पूजनीया गुरुवर्या के इस इचलकरंजी चातुर्मास में अद्‌भुत शासन प्रभावना हुई है। पूज्याश्री ने लगातार 40 दिनों तक आयंबिल व अन्त में उपवास करके बडी तपस्या संपन्न की है। हम सभी सकल संघ उनकी तपस्या की शाता पूछते हैं।

# भिवण्डी में नवकार पूजन

भिवण्डी 9 अक्टुंबर। श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ एवं चातुर्मास कमेटी-2019 भिवंडी के तत्त्वावधान में पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूजनीया साध्वी डॉ. शासनप्रभाश्रीजी म. एवं साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा-२ की निश्रा में दिनांक 09-10-201, आसोज सुदी 11 को 68 दिवसीय नवकार महामंत्र जाप का महापूजन दादावाड़ी में बड़े ही आनंदपूर्वक हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

महापूजन करवाने हेतु विधिकारक अश्विन भाई, बैंगलोर ने बहुत ही सुंदर भावों से महापूजन करवाया और संगीतकार संजय भाई जैन ने अपने संगीत से सभी को मंत्रमुग्ध किया।

# उदयपुर में अर्हद् महापूजन

उदयपुर 12 अक्टूबर। श्री जैन श्वेताम्बर वासुपूज्य जिनमंदिर एवं जिनदत्तसूरि दादावाड़ी, उदयपुर में पू. साध्वी अभ्युदयाश्रीजी म., साध्वी स्वर्णोदयाश्रीजी व साध्वी सत्वोदयाश्रीजी म. की निश्रा में पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन हुआ। प्रथम दिन अर्हद् महापूजन के तहत कुम्भ स्थापना, अखण्ड दीपक स्थापना। दूसरे दिन 10 दिक्‌पाल पूजन, 12 राशि पूजन, 16 विद्या देवी पूजन, 27 नक्षत्र पूजन, पंच परमेष्ठी पूजन, परमात्मा का अभिषेक तथा अर्हद् महापूजन हवन किया गया। जिसमें सकल संघ की विशेष उपस्थिति रही।

-दलपत दोशी, सह सचिव

# साधर्मिक भक्ति का कार्यक्रम आयोजित

मुंबई 13 अक्टुंबर। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् मुंबई शाखा द्वारा साधर्मिक भक्ति का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम गच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा एवं पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा में हुआ।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष पू. गुरुदेव आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. की 34वीं पुण्यतिथि पर दीवाली से पहले 108 साधर्मिक बंधु परिवार को जीवनावश्यक वस्तु राशन, मिठाई, बर्तन और नकद दिया जाता है ताकि उनके घर पर दीवाली हर्ष और उल्लास के साथ मनाई जावे। सभी साधर्मिक भाई को भोजन कराके उनको यह किट प्रदान की गई। इस सम्पूर्ण भक्ति के लाभार्थी सत्यपुर (सांचौर) निवासी प्रेमलता बेन मिश्रीमल श्रीश्रीश्रीमाल परिवार था। इस अवसर पर महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय प्रचार संयोजक धनपत कानुंगो, अध्यक्ष शांतिलालजी, उपाध्यक्ष महेंद्र, सचिव मुकेश सहित अनेक सदस्य मौजूद थे।

# जैसलमेर दुर्ग के जिनालयों का ध्वजारोहण

जैसलमेर 1 नवंबर। श्री जैसलमेर लोद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वे. ट्रस्ट जैसलमेर द्वारा दुर्ग स्थित जिनालयों में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी महाराज एवं आर्य मेहुलप्रभसागरजी महाराज की निश्रा में मंत्रोच्चार के साथ जिनेश्वर देव की प्रतिमाओं के अठारह अभिषेक किए गए।

दि. 1 नवंबर को नूतन ध्वजाओं की शोभायात्रा जैन भवन से शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई गाजे बाजे के साथ सकल जैन संघ सहित दुर्ग पहुंची। जिनालय के शिखरों पर मूलनायक चिंतामणी पार्श्वनाथ भगवान के साथ ही 96 ध्वजाएं मुख्य लाभार्थी अनिल त्रिभुवनदास शाह परिवार नवसारी वालों द्वारा चढाई गई। आर्य मेहुलप्रभसागर महाराज ने कहा कि जीवन में चढती हुई ध्वजा एवं स्थापित होती प्रतिमा दर्शन का अवसर प्रबल पुण्योदय के प्रभाव से प्राप्त होता है और ज्ञान पंचमी के शुभ दिवस एक साथ इतनी संख्या में यह अवसर प्राप्त करके जो पुण्य का संचय हुआ है वह आत्मा को मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करेगा। कार्यक्रम का संचालन महेन्द्र भाई बाफना द्वारा किया गया। पूर्व अध्यक्ष महेन्द्र भंसाली ने उपस्थित सकल संघ को जैसलमेर तीर्थ विकास में पूर्ण सहयोग हेतु आग्रह किया। दुर्ग प्रभारी अर्जुन भंसाली ने लाभार्थी परिवार का बहुमान कर धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष शेरसिंह राखेचा, सहमंत्री नेमीचंद जैन, ट्रस्टी आनंद राखेचा, मनोज राखेचा, महेन्द्र भाई बाफना, मनोज जिंदाणी, तरुण जिंदाणी सहित मुख्य व्यवस्थापक विमल जैन, दीपक कोटेचा आदि मौजूद थे। विधिविधान सुनील भाई द्वारा संपन्न करवाया गया।

-पवन कोठारी, जैसलमेर

## डॉक्टरेट उपाधि प्रदान

पाली 11 अक्टुंबर। जैन विश्व भारती इंस्टिट्यूट लाडनूं (राज.) द्वारा 11 अक्टुबर 2019 को पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी समकितप्रज्ञाश्रीजी म. को दशवैकालिक सूत्र का विवेचनात्मक अध्ययन इस विषय पर शोधप्रबंध प्रस्तुत करने पर डॉक्टरेट उपाधि प्रदान की गई। जैन विश्व भारती इंस्टिट्यूट लाडनूं (राज.) से आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में यह शोधप्रबंध का कार्य हुआ। जहाज मंदिर परिवार की ओर से उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं। प्रेषक- पी.डी. मालू

# बीकानेर में हुआ दादा गुरुदेव महापूजन

बीकानेर, 02 अक्टूबर। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में पांच दिवसीय महोत्सव के तहत बागड़ी मोहल्ले की ढड्ढा कोटड़ी में 108 जोड़ों ने भक्ति गीतों व श्लोकों के साथ दादा गुरुदेव का महापूजन किया। महापूजन का लाभ सुंदरलाल संदीप सौरभ बोथरा परिवार उदरामसर ने लिया। पर्युषण पर्व के दौरान विभिन्न तपस्याएं करने वाले श्रावक-श्राविकाओं व विविध प्रतियोगिता में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। महोत्सव के तहत गुरुवार को ढढ्ढा कोटड़ी में तपस्वियों का अभिनंदन तथा विभिन्न प्रतियोगिता में विजेताओं को चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मलजी धारीवाल, खरतरगच्छ महिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती चारू नाहटा, सामयिक महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती संतोष नाहटा ने पुरस्कृत किया।

साध्वीश्री सौम्यगुणाश्रीजी म. एवं विधिकारक यशवंत गोलेछा व संजय ककरेचा ने श्लोकों का वांचन किया वहीं वरिष्ठ कलाकार सुनील पारख, नेहा पारख और अरिहंत नाहटा ने अनेक भक्ति गीत गाकर माहौल को 5 घंटें तक भक्तिमय बनाएं रखा।

# भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक महोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक संपन्न

जैसलमेर 29 अक्टुंबर। भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण कल्याणक महोत्सव पू. गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी महाराज एवं आर्य मेहुलप्रभसागरजी महाराज के सानिध्य में एवं सकल जैन संघ जैसलमेर की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुनि मेहुलप्रभसागरजी महाराज ने इस दिन का महत्व बताते हुए कहा कि कार्तिक वदि अमावस्या की मध्य रात्रि में 2546 वर्ष पूर्व सोलह प्रहर की अनवरत देशना देते हुए परमात्मा महावीर ने अपापापुरी में आठों कर्मों का क्षय कर परम पद मोक्ष रूपी लक्ष्मी का वरण किया था, उसी उपलक्ष्य में परमात्मा का निर्वाण कल्याणक मनाया जाता है। उसी रात्रि में गणधर गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ था।

दुर्ग स्थित श्री महावीरस्वामी जिनालय के पट्ट खोलने का लाभ महेन्द्रकुमार कुंदनमलजी राखेचा परिवार ने लिया। मुनि भंगवतों ने परमात्मा का चैत्यवंदन कर सप्त स्मरण स्तोत्र का पाठ किया। परमात्मा महावीर व गौतम स्वामी को प्रथम लड्डू अर्पण करने का लाभ सुरेन्द्रकुमार राजेशकुमार भंसाली परिवार द्वारा लिया गया। मुनिश्री द्वारा अनंत लब्धिनिधान गणधर गुरु गौतम स्वामी के रास का वांचन किया गया। भगवान की आरती का लाभ पारसकुमार लक्ष्मीचंदजी राखेचा परिवार ने, गौतमस्वामी की आरती का लाभ भंवरलाल गांधी परिवार सांचोर वालों ने लिया।

श्री पार्श्वनाथ भगवान के जिनालय के पट्ट खोलने का लाभ रंजन बेन शाह पालनपुर परिवार ने लिया। दुर्ग जिनालय प्रभारी अर्जुन भंसाली ने सभी का आभार व्यक्त किया।

-पवन कोठारी

# कालापीपल में महापूजन

कालापीपल 12 सितंबर। जैन श्वेतांबर मंदिर में बुधवार को 13वें तीर्थंकर भगवान विमलनाथ स्वामी का महापूजन करवाया गया। चातुर्मास हेतु विराजित पूज्य महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या साध्वी अमीपूर्णाश्रीजी म.सा. की निश्रा में श्री मोहनभाई नवलबेन पुत्र दिनेश कुमार गाला व पुत्री गीता राजेश गोसर नागपुर परिवार ने श्री विमलनाथ भगवान के पूजन का लाभ लिया। पूज्य साध्वीजी के मुखारविन्द से उच्चरित हुए इस महापूजन में सभी ने तन्मयता से भाग लिया, पूजन करीब 4 घंटे चला। –यशवंत जैन

# मिथिला तीर्थ की पुनर्स्थापना

श्री मिथिला तीर्थ की पुनर्स्थापना प्रतिष्ठा वि. सं. 2076 माघ सुदी 7, 1 फरवरी 2020 को होनी निश्चित हुई है। यही जैन धर्म के 19वें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथजी व 21वें तीर्थंकर श्री नमिनाथजी के जन्म स्थान सह 4-4 कल्याणक भूमि है। 125 वर्षों से विच्छेदित रहने के बाद तीर्थ की पुनर्स्थापना हो रही है।

मिथिला तीर्थ सीतामढ़ी में स्थित है। सोलह सतियों में एक सीता सती की जन्म स्थली सीतामढ़ी (बिहार) है। परमात्मा महावीर के छः चातुर्मासों का सौभाग्य भी इसी तीर्थ को मिला है।

श्रीमती रुकमणिदेवी हरखचन्दजी नाहटा परिवार (तीर्थ संस्थापक) की ओर से पधारने का निवेदन है।

तीर्थ पताः श्री मिथिला जैन तीर्थ, जैन श्वेताम्बर कल्याणक तीर्थ न्यास, मल्लि नमि मार्ग, शंकर चौक, डुमरा, सीतामढ़ी, (बिहार-843301)

# मौन साधना की पूर्णाहुति पर जीवदया

बाड़मेर 31 अक्टूबर। पूज्य गणाधीश श्री विनयकुशलमुनिजी म. के 31 दिवसीय वर्धमान विद्या मंत्र की मौन साधना की पूर्णाहुति पर अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद और महिला परिषद, शाखा बाड़मेर द्वारा नन्दी गौशाला में गुड़ व हरा चारा खिलाया गया। इस कार्यक्रम में केयुपए वंक`एमपीब ाड़मेरक`अ शोकध ारीवाल,प्र दीपश्र ीश्रीमाल (मुम्बई), पुरुषोत्तम सेठिया (बालोतरा), रतन बोथरा (अहमदाबाद), केवलचन्द छाजेड़, राजू वडेरा, प्रकाश पारख, गौतम संखलेचा, रमेश कानासर, नरेश लूणिया, पुखराज म्याजलार, सुनिल बोथरा, रमेश बोथरा, केवलचन्द नाहटा, मुकेश धारीवाल, कपिल लूणिया, अशोक बोहरा टेन्ट, सुनिल छाजेड़, दिनेश छाजेड़, रुपेश संखलेचा, नर्बदा छाजेड़, सरिता मालू, उर्मिला जैन, प्रमिला वडेरा, ममता वडेरा, उषा छाजेड़, चन्द्रा छाजेड़, गुड्डी धारीवाल, मांगीदेवी बोथरा, राजुल बोथरा, अनिता बोथरा, मीना भंसाली, रुपाली भंसाली, ममता संखलेचा आदि सदस्य उपस्थित रहे।

**सादर श्रद्धांजलि**

**श्री घेवरचंदजी नाहटा, गांधीधाम** श्री घेवरचंदजी बस्तीरामजी नाहटा का दिनांक 4 अक्टुंबर को स्वर्गवास हो गया है। आप गांधीधाम (कच्छ गुजरात) में रहते हुए सभी धार्मिक गतिविधियों में अग्रणी रहते थे। परमात्मा एवं दादा गुरुदेव के प्रति समर्पित श्री नाहटाजी के स्वर्गवास से एक स्थान शून्य हुआ है। जहाज मंदिर परिवार की ओर हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

# जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर स्कूल जा रहा था। गणित का होमवर्क उसने किया नहीं था। थोडा चिन्ता में पड़ा था। क्योकि वह जानता था कि गणित के अध्यापक बहुत कठोर स्वभाव के हैं। होमवर्क नहीं करने पर वे पिटाई करने में जरा भी देर नहीं लगाते। इस पिटाई के डर से ही वह चिन्ता में पड़ा था।

कोई बहाना खोज रहा था। बहुत सोच विचार के बाद उसने एक बहाना निश्चित कर लिया।

स्कूल में अध्यापकजी ने उसकी नोटबुक चेक की। नोटबुक देख कर गुस्से से भर कर बोले- होमवर्क क्यों नहीं किया?

जटाशंकर धीरज से बोला- मास्टरजी! मैं आज सुबह होमवर्क करने वाला था। पर कल रात आपके पिताजी मेरे सपने में आये।

मास्टरजी बोले- क्या कहा! मेरे पिताजी तेरे सपने में आये!

जटाशंकर- हाँ! उन्होंने मुझे बहुत प्यार किया और कहा- बेटा चिन्ता मत करना। होमवर्क नहीं हो तो रहने देना। अध्यापक जो मेरा बेटा है, मैं उसे बोल दूंगा, वह तुम्हें कुछ नहीं कहेगा।

इसलिये मास्टरजी मैंने होमवर्क नहीं किया।

मास्टर घटाशंकर हैरान हो गये। क्या बहाना बनाया है?

मास्टरजी बोले- अच्छा! तो मेरे पिताजी ने तेरे सपने में आकर ऐसा कहा!

- हाँ, मास्टरजी। जटाशंकर राजी होता हुआ बोला। उसने सोचा कि मेरा बहाना काम आ गया।

तभी मास्टरजी बोले- बेटा, मेरे पिताजी मेरे सपने में भी आये थे।

जटाशंकर- अच्छा!

मास्टरजी- हाँ! और उन्होंने कहा- जटाशंकर यदि होमवर्क करके नहीं आये तो गिनकर 8 थप्पड़ लगाना।

जटाशंकर समझ गया कि यह तो मेरे नहले पर दहला आ गया है।

जटाशंकर बोला- मास्टरजी! आपके पिताजी भरतपुरिये लोटे की भांति गुड़क जाते हैं। बडे अजीब है आपके पिताजी। मेरे सपने में कुछ कहते हैं और आपके सपने में कुछ और ही कह जाते हैं। वे कोई भरोसेमंद नहीं है।

अध्यापकजी अपने पिताजी के बारे में सुनकर सन्न रह गये।

**सपनों का हाल तो ऐसा ही होता है। क्योंकि उनका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। सपने में देखा गया मकान रहने के काम नहीं आता। सपने का धन व्यक्ति को संपन्न नहीं बना सकता और सपने का पदारोहण महान् नहीं बना सकता, इसलिये सपने देखना बंद करो और यथार्थ में जीने का पुरुषार्थ करो।**

# हार्दिक श्रद्धांजलि

अध्यक्ष
श्री शीतलनाथ भगवान एवं
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, पादरु

संयोजक
श्री जीरावला जिनकुशलसुरि
दादावाडी ट्रस्ट

सचिव
श्री जिनकान्तिसागरसुरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मंदिर, मांडवला

ट्रस्टी
जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
अखिल भारतीय खरतरगच्छ
प्रतिनिधि महासभा

## श्री कैलाशकुमार भंवरलालजी संकलेचा (पादरु)

**जन्म**
10.11.1971

साथ है उमंगों में, साथ है संस्कारों में,
साथ है भावनाओं में, साथ है निष्ठा में,
साथ है प्रगति में, साथ है सफलता में,
आप साथ हैं हमारे जीवन के हर कदम पे

**महाप्रयाण**
07.10.2019

### शोकाकुल

| | | |
|---|---|---|
| माताजी | : | मोहिनीदेवी भंवरलालजी संकलेचा |
| काकाजी | : | जुगराज, मोतिलाल, प्रवीणकुमार |
| भाई | : | ललितकुमार-ललितादेवी, राजकुमार-संगीतादेवी, गौतमचन्द-शिल्पादेवी |
| चचेरा भाई | : | पंकज, सुरेश, भरत, अनिल |
| भतिज-भतिज वधु | : | मनीष-सोनु |
| भतिज-भतिजी | : | मिशाल, रुचि, काजोल, इशिता |
| भुआ-भुडोसा | : | नाजुबाई मोहनलालजी बागरेचा, कमलाबाई भंवरलालजी तातेड़ |
| भतिजी-जमाई | : | निकिता-नविनकुमारजी बाफणा |
| दोहिता-दोहिती | : | प्रित बाफणा, पहल बाफणा |

**Firm**

**NAV NIDHI ENTERPRISES,**
Chennai

**ROOPAM COLLECTION,**
Hyderabad

### निवास स्थान

**ललितकुमार राजकुमार संकलेचा**
No. 15, Manikandan Street, 3rd Floor,
Sowcarpet, Chennai-01 (M) 98400 94343

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।। ।। श्री वर्धमान स्वामिने नमः ।।
अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः
खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।
।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकान्तिसागरसूरि गुरुभ्यो नमः ।।

## पावन ऊर्जा केन्द्र अनंत आत्माओं की तपोभूमि साधना स्थली श्री गिरनार महातीर्थ में

# नेमिकान्ति-मणि ९९ (नवाणुं) यात्रा का महाआयोजन

## सकल श्री संघ को आत्मीय आमंत्रण

**नवाणु यात्रा प्रारंभ**
मिगसर सुदि 6
दि. 2.12.2019
सोमवार

**माला का भव्य आयोजन**
पौष सुदि 6, बुधवार
हैप्पी न्यू ईयर
दि. 01.01.2020

**नवाणु यात्रा समापन**
माघ वदि 6
दि. 16.1.2020
गुरुवार

पावन निश्रा
प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
**श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.**
प. पू. मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा.
प. पू. मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा.

पावन प्रेरणा एवं सानिध्यता
श्री पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका गणिनी पद विभूषिता
**परम पूज्या गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा.**
परम पूज्या तपोरत्ना
**श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा आदि ठाणा**

❁ आयोजक ❁

## आदिनाथ जैन ट्रस्ट

1, कडप्पा स्ट्रीट, चूल्ले, चैन्नई-600112

**संयोजक : श्रेष्ठिवर्य वीरेन्द्रमलजी मेहता, चैन्नई, संघवी रमेशजी मुथा, चैन्नई**

विशेष : माल महोत्सव का कार्यक्रम
प.पू. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की
तारक निश्रा में संपन्न होगा।

❁ सम्पर्क सूत्र ❁
डॉ. मनोज गुलेच्छा 98400 52494
संतोष बरड़ीया 98414 50030

❁ नवाणुं स्थल
कांताबा धर्मशाला एवं
नेमिजिन धर्मशाला, तलेटी गिरनार

**श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,**
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com

श्री जिनकान्तिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, माँडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408